

17वां अंक । अर्द्धवार्षिक । जुलाई-दिसंबर 2020



सत्यमेव जयते



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

सुरभि



: कार्यालय :

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- ।।)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा- ।)

महानिदेशक-लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद, शाखा कार्यालय

ओड़िशा, भुवनेश्वर — 751 001

कार्यालय की कुछ झलकियाँ



कार्यालय में भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का आगमन



भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा पौधारोपण



हिंदी पत्रिका सुरभि का विमोचन



हिंदी कार्यशाला (महालेखाकार /लेप.- I) का आयोजन



कार्यालय द्वारा वस्त्रदान



हिंदी कार्यशाला (महालेखाकार /लेप.- I) का आयोजन

सुरभि परिवार

परामर्शदातृ समिति

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा- 11)

महालेखाकार

(लेखापरीक्षा- 1)

उपमहालेखाकार

(प्रशासन / लेखापरीक्षा- 1)

उपमहालेखाकार

(प्रशासन / लेखापरीक्षा- 11)

उपनिदेशक

(केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री राहुल प०

(उपमहालेखाकार/प्रशासन)

सह संपादक

श्री अशोक कुमार पंडा

(वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी)

श्रीमती शुभस्मिता आचार्य

(वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी)

श्री कपिलाश प्रधान

(वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी)

श्री रोहित कावा

(सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी)

श्री माठा कूजूर

(पर्यवेक्षक)

श्री गिरराज शरण अग्रवाल

(वरि. अनुवादक)

श्री शैलेंद्र कुमार

(वरि. अनुवादक)

श्री मंजेश पराशर

(वरि. अनुवादक)

श्री लोकेश चंद्र लाल

(कनि. हिंदी अनुवादक)

श्रीमती मोनिका चौहान

(कनि. अनुवादक)

सुश्री दीपिका चटर्जी

(कनि. अनुवादक)

श्री जितेंद्र कुमार

(डीईओ)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पदनाम	पृष्ठांक
01	शब्द कुछ कहते हैं	श्री लोकेश चंद्र लाल	कनि. हिंदी अनुवादक	07
02	हिंदी भाषा का प्रयोग - जहाँ चाह, वहाँ राह	श्रीमती मोनिका चौहान	कनि. अनुवादक	10
03	प्रतिबिम्ब	श्रीमती कमला नायक	वरि.लेप.अ.(सेवानिवृत्त)	11
04	कुनी	श्री अखिल जेना	पर्यवेक्षक	14
05	एफ 5	श्री शैलेंद्र कुमार	वरिष्ठ अनुवादक	15
06	जीवनदान	श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव	पत्नी- श्री लोकेश चंद्र लाल, कनि. हिंदी अनु.	16
07	पिता	श्री शैलेंद्र कुमार	वरिष्ठ अनुवादक	18
08	कविता	श्रीमती मीनाक्षी आचार्य	पर्यवेक्षक	18
09	राजभाषा हिंदी की वर्तमान दशा	श्री आशीष रंजन	आशुलिपिक	19
10	हम मजदूर हैं	श्री सतीश कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	20
11	संगीत थरेपी	श्री विनय सिंह	पति- श्रीमती मोनिका चौहान, क. अनुवादक	21
12	चलो आज फिर से पहले वाली होली मनाए	श्री गिरराज शरण अग्रवाल	वरिष्ठ अनुवादक	23
13	तंबाकू और उसके दुष्प्रभाव	श्रीमती निभा रंजन	पत्नी- श्री आशीष रंजन, आशुलिपिक	23
14	नीम	सुश्री प्रीति प्रज्ञा नायक	पुत्री- श्री प्रियव्रत नायक, वरि. लेप.	24
15	भारत में लोकतंत्र का भविष्य	श्री ऋतुध्वज	वरि. लेखापरीक्षक	25
16	वर्तमान में गाँधीवाद की सार्थकता	श्री राजेश कुमार झा	वरि. लेखापरीक्षक	27
17	अहंकार	श्री जितेंद्र कुमार	डी. ई. ओ.	29
18	दशहरे की उषाकाल	सुश्री प्रतिभा कुमारी	आशुलिपिक	31
19	छात्र संघर्ष	श्री आलोक कुमार झा	डी. ई. ओ.	31
20	नसीब है कि जिंदगी नसीब है	श्री गिरराज शरण अग्रवाल	वरिष्ठ अनुवादक	33
21	प्रकृति	सुश्री प्रीति चंदा	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	33
22	लॉकडाउन	सुश्री ज्योति	अनुज्ञा- प्रीति चंदा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	34
23	कवच	श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव	पत्नी- श्री लोकेश चंद्र लाल, कनि. हिंदी अनु.	34
24	वन सम्पदा	श्री लोकेश कुमार	डी. ई. ओ.	36
25	पापा	श्रीमती अंकीता कुमारी अजय	पत्नी- श्री शैलेंद्र कुमार, वरि. अनुवादक	38
26	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2020-21 का वार्षिक कार्यक्रम			39
27	अन्य कार्यालयों से आयी पत्रिका सुरभि हेतु प्रशंसा / सुझाव व शुभेच्छा पत्र			41

१७वां अंक

श्री बिभुदत्त बसंतिया

प्रधान महालेखाकार

कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-।।)

ओड़िशा, भुवनेश्वर



संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष है कि कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 17वें अंक का ई-प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में 'सुरभि' पत्रिका निरंतर महत्त्वपूर्ण योगदान करती रही है तथा आगे भी करती रहेगी । हिंदी हमारी राजभाषा है । अतः इसके प्रति समर्पित होना हमारा संवैधानिक दायित्व भी है ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल को शुभकामनायें ।

(बिभुदत्त बसंतिया)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-।।)

सुश्री स्मृति

महालेखाकार

कार्यालय-महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

ओड़िशा, भुवनेश्वर



संदेश

‘सुरभि’ पत्रिका प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), ओड़िशा, भुवनेश्वर तथा उप निदेशक - केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा का कार्यालय, हैदराबाद शाखा ओड़िशा की शिरोमणी है। ‘सुरभि’ के द्वारा कार्यालय के सभी कार्मिकों के हिंदी लेखन क्षमता का प्रदर्शन देखने को मिलता है।

प्रत्येक वर्ष कार्मिकों द्वारा दिए गए रचनाओं से हिंदी साहित्य की विभिन्न प्रकार की झलकियां इस पत्रिका में दिखती है। ‘सुरभि’ का नियमित रूप से प्रकाशन करना अत्यंत ही सराहनीय है। राजभाषा के प्रति सम्मान प्रकट करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। इस शुभ कार्य के लिए मैं संपादक मंडल, रचनाकारों एवं प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को धन्यवाद एवं बधाई देती हूँ।

(स्मृति)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

श्री राहुल प.

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय-महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

ओड़िशा, भुवनेश्वर



संपादकीय

हम सब के अथक प्रयासों से 'सुरभि' के 17वें अंक तक हम सफलतापूर्वक पहुंच पाए हैं। 'सुरभि' को वार्षिक से अर्द्ध वार्षिक संस्करण तक सफलतापूर्वक पहुंचाने में भी आप सब के प्रयास सराहनीय हैं। विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त शुभेच्छा पत्र से 'सुरभि' के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बल प्राप्त होता है साथ ही ये हमें कुछ नया करने को प्रेरित करते हैं।

हम सदैव इस प्रयास के साथ 'सुरभि' को आगे बढ़ा रहे हैं कि इसमें उत्कृष्ट रचनाओं का समावेश किया जाए ताकि पाठकों को हमारी पत्रिका से राजभाषा स्तरीय सूचनाएं एवं जानकारी प्राप्त हो सके।

मेरी तरफ से संपादक मंडल के साथ पाठकों को भी हार्दिक बधाई।

(राहुल प.)

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

शब्द कुछ कहते हैं

श्री लोकेश चंद्र लाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
lokeshc1.odi.au@cag.gov.in



सामान्य व्यवहार या बोलचाल की भाषा के शब्दों से परे ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े शब्दों को पारिभाषिक शब्द कह सकते हैं। इन पारिभाषिक शब्दों के प्रशासनिक रूप का उपयोग कार्यालय में प्रशासनिक कार्यों के लिए होता है। ऐसे कार्यों का संबंध विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालयों की आंतरिक प्रशासन व्यवस्था से होता है। इसलिए कार्यालयी भाषा सरकारी कर्मचारियों के साथ-साथ जन सामान्य से भी संबंधित होती है। अतः सुबोधगम्यता इसकी पहली शर्त होती है। विषय को स्पष्ट सीधे शब्दों में कहा जाना अति आवश्यक होता है। सरकारी पत्राचार के अंतर्गत कई प्रकार के पत्र शामिल किए जाते हैं। इनकी भाषा सीधी, सरल और सुसंगत होना अपेक्षित है। इसलिए न तो ठेठ स्थानीय और प्रचलित भाषा का प्रयोग होता है और न ही जटिल अथवा साहित्यिक भाषा का। अनेकार्थकता की यहां कोई गुंजाइश ही नहीं होती। राजभाषा अधिनियम में यह प्रावधान किया गया है कि राजभाषा हिंदी की लिपि देवनागरी होगी लेकिन अंतरराष्ट्रीय संख्या यानी 0123456789 का प्रयोग किया जाएगा।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के प्रावधानानुसार भारत सरकार के केंद्रीय कार्यालयों में इसके अंतर्गत आने वाले समस्त पत्रों व सामग्रियों को द्विभाषी अर्थात् हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किया जाना चाहिए। प्रथम दृष्टया यह हिंदी विरोधी कदम प्रतीत होता है। इसका कारण है कि अंग्रेजी को हिंदी के समकक्ष या उससे बढ़कर प्राथमिकता दी गई है। हालांकि कार्यालयों में नियुक्त अनुवादकों, हिंदी अधिकारियों व निदेशकों द्वारा अनुवाद के माध्यम से हिंदी को अपनी पहचान मिली है। प्रायः देखा जाता है कि कार्यालय में अंग्रेजी पर निर्भरता अधिक है। उसका मूल

शब्द या अंग्रेजी रूपांतरण तो उपलब्ध होता है किंतु यदि उन शब्दों के हिंदी रूपांतरण खोजने जाए तो बहुत समय लग जाता है या यों कहें कि बरसों बीत जाते हैं। इसलिए कुछ विदेशज शब्दों को हिंदी में पारिभाषिक शब्दों के रूप में रूपांतरण करने की प्रक्रिया अपनाई जाती है। कार्यालयी भाषा में प्रयुक्त प्रशासनिक शब्दावली का मानक रूप वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा मानकीकृत किया जाता है। तकनीकी शब्दों का अर्थ अत्यंत सूक्ष्म और विस्तृत होता है। साथ ही साथ यह संभव है कि किसी एक शब्द की परिभाषा किसी दूसरे क्षेत्र में भिन्न हो सकती है। जैसे – चार्ज (Charge) शब्द का प्रशासन में अर्थ प्रभार व कार्यभार, राजनीति में आरोप, वाणिज्य में खर्च, विज्ञान में आवेश आदि हो सकता है। इसी तरह पोस्ट (Post) का अर्थ प्रशासन में पद या चौकी, संचार में डाक, स्थापत्य कला में स्तंभ, साहित्य में गेय मुक्त कविता आदि हो सकता है। इसीलिए इसे एक अर्थ एक शब्द का सिद्धांत भी कहते हैं। यदि हम कंप्यूटर प्रणाली से परिचित नहीं हैं तो हम माउस, प्रोग्रामिंग, मेमोरी, हार्ड डिस्क का सही तकनीकी अर्थ नहीं समझ सकते। प्रशासनिक शब्दावली पर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि इसकी एक विशेषता है कि इसमें संस्कृत, उर्दू, हिंदी तथा अंग्रेजी के शब्दों का सम्मिश्रण है। जैसे – दस्तावेज (Documents), मुआवजा (Compensation), जुर्माना (Penalty), ब्यौरा (Details), तदर्थ (Adhoc), सक्षम (Competent), पृष्ठांकन (Endorsement), स्पष्टीकरण (Explanation) आदि।

प्रशासनिक शब्दावली की दूसरी विशेषता है सूक्ष्म तकनीकी अर्थ भेद। कुछ शब्दों के विशेष अर्थ होते हैं जिनका प्रयोग सही स्थान पर करना आवश्यक होता है वरना अनर्थ भी हो सकता है जैसे – Dismissal from service सेवा से पदच्युति, Removal from service सेवा से हटाया जाना, Termination of service सेवा समाप्ति, Discharge from service सेवा मुक्ति, Retirement from service सेवानिवृत्ति। इसलिए इस प्रकार की संभावनाओं को रोकने के लिए उपयुक्त तथा स्पष्ट पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जरूरी हो जाता है।



शब्दावली के आधार पर ऐसे अनुवाद को कठिन कहना एक हद तक गलत है क्योंकि शब्दावली तभी तक कठिन होती है जब तक कि उसका प्रचलन न हो । प्रशासनिक कामकाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा अत्यंत औपचारिक होती है जिसमें सर्वत्र शिष्टाचार का ध्यान रखा जाता है । इसलिए ऐसे टिप्पणियों, पत्रों या अन्य दस्तावेजों में जगह-जगह औपचारिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग दिखाई देता है । जैसे – प्रिय महोदय Dear Sir, प्रिय डॉक्टर लाल Dear Dr Lal, महोदय Sir, सेवा में To, सादर With regard, सद्भावना के साथ With compliments, भवदीय Yours faithfully, आपका Yours sincerely, पुनश्च: P.S., प्रतिलिपि Copy to आदि ।

स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा की सामग्री से प्रतिस्थापन होता है । यह ध्यान देने योग्य बात है कि यह प्रतिस्थापन अर्थपरक तथा बुद्धि संगत और तदनुरूप होनी चाहिए । तभी अनुदित सामग्री पाठ्य बन पाती है । इस तरह कहीं न कहीं प्रशासनिक शब्दावली के अनुवाद में विश्लेषण की क्रिया जुड़ी होती है ।

Action may be taken वाक्यांश का अवलोकन करिए इसका सामान्य अनुवाद होगा कार्रवाई की जा सकती है लेकिन कार्यालय की भाषा में यह नोट कोई अधिकारी अपने उच्चतर अधिकारी को नहीं लिखता बल्कि अपने से नीचे के अधिकारी या कर्मचारी को लिखता है । अतः उसमें सुझाव के साथ आदेश भी निहित रहता है इसलिए इसका अर्थ होता है कार्रवाई की जानी चाहिए या कार्रवाई करें ।

यदि हम गौर करें तो पाएंगे कि टिप्पणी लिखते समय हम सहज और संक्षिप्त भाषा का प्रयोग करते हैं । लघु टिप्पणी या विस्तृत टिप्पणी में जटिलता का कोई स्थान नहीं है । कृपया जाँच करें, पूर्व पत्रों के साथ प्रस्तुत करें, समर्थित दस्तावेज संलग्न करें, मंजूरी दी जाती है, शीघ्र कार्रवाई करें, कार्रवाई अपेक्षित नहीं है, फाइल करें, कृपया अनुमोदन हेतु प्रस्तुत आदि सहज टिप्पणी के उदाहरण हैं । यहाँ फाइल करें के स्थान पर मिसिल करें भी लिखा जा सकता है लेकिन सहजता को ही

प्राथमिकता देनी चाहिए ।
कुछ वाक्यांशों एवं शब्दों के सहज रूप नीचे दिए गए हैं ।
कृपया अवलोकन करें ।
Abide by - पालन करना
Applicable to - पर लागू है
As far as possible - यथासंभव
By virtue of office - पद की हैसियत से, पदेन
Continue in office - पद पर बने रहना
In continuation of - के क्रम में
Duly filled in - विधिवत भरा हुआ
Hold lien on post - पद पर पुनः ग्रहणाधिकार होना
In exercise of - का प्रयोग करते हुए
Action may be taken as proposed - यथा प्रस्तावित कार्रवाई करें
As a matter of fact - यथार्थतः / वस्तुतः
Drawing your attention to - की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुए
As the case may be - यथास्थिति
Do the needful - आवश्यक कार्रवाई करें
Circulate and then file - संबद्ध व्यक्तियों को दिखाकर फाइल करें
In the official capacity - पदीय हैसियत से
Laid down in - में निर्धारित
In supersession of - का अधिक्रमण करते हुए
In the first instance - प्रथमतः
Made to order - आदेशानुसार निर्मित
Not withstanding - के होते हुए भी
Out today - आज ही भेजिए
Under intimation to this office - इस कार्यालय को सूचित करते हुए
Vide letter no. - पत्र संख्या देखिए
Advance - अग्रिम
Inventory - वस्तु सूची
Recommendation - संस्तुति या अनुशंसा
Reference - संदर्भ
Entry - प्रविष्टि
Subsidy - आर्थिक सहायता
Cadre - संवर्ग
Compensation - क्षतिपूर्ति
Draft - मसौदा





Payment - भुगतान
Sanction - संस्वीकृति
Re-payment - अदायगी
Detention - निरोध
Resignation - त्यागपत्र या इस्तीफा
Attestation - अनुप्रमाणित
Deduction - कटौती
Inward register - आवक पंजिका
Outward register - जावक पंजिका
Claim - दावा
Posting - तैनाती
Postpone - स्थगन
Dismiss - खारिज करना
Write off - बट्टे खाते में डालना
Audit Report - लेखापरीक्षा प्रतिवेदन
Superannuation - अधिवर्षिता
Superintended - अधीक्षक
Secretary - सचिव
Additional Director - अपर निदेशक
Under Secretary - अवर सचिव
Parent Office - मूल कार्यालय
Budget estimate - बजट प्राक्कलन
Head of Department - विभागाध्यक्ष
Head of Office - कार्यालय अध्यक्ष
Translator - अनुवादक
Assistant - सहायक
By no Means - कदापि नहीं
By all Means - निसंदेह या अवश्य
Errors and Omissions - भूल चूक
For favour of orders - आदेशार्थ
Having regard to - को ध्यान में रखते हुए
Latest by - अधिक से अधिक
Approval - अनुमोदन
Autonomous - स्वायत्त
Basic Pay - मूल वेतन
Countersigned - प्रतिहस्ताक्षरित
Under Signed - अधोहस्ताक्षरित
Confirmation - पुष्टीकरण
Contrary - विपरीत / प्रतिकूल
Co-Ordination - समन्वय
Claim - दावा
Dispute - विवाद

Designation - पदनाम
Supervisor - पर्यवेक्षक
Relevant - से मिलता-जुलता
Short term - लघु अवधि
Status quo - यथास्थिति
Supplementary - पूरक
Ex-parte - पक्षपातवाला
Ex-post facto sanction - कार्योत्तर संस्वीकृति
Formal - औपचारिक
Probation - परीवीक्षा
Perusal - अवलोकन
Satisfactory - संतोषजनक
Vacancy - रिक्ति
Call for an explanation - स्पष्टीकरण के लिए तलब करना
Hard and fast rule - कठोर नियम
In the presence of - की उपस्थिति में
Eligibility - पात्रता
Serial No. - क्रम संख्या
Submitted for Perusal - अवलोकन के लिए प्रस्तुत
With reference to the letter - पत्र के संदर्भ में
Reminder - अनुस्मारक
General Manager - महाप्रबंधक
Technical Resignation - तकनीकी इस्तीफा
No Due Certificate - बेबाकी प्रमाणपत्र
Honourarium - मानदेय
Debitable - अविकलन



हिंदी भाषा का प्रयोग - जहाँ चाह, वहाँ राह

श्रीमती मोनिका चौहान
कनिष्ठ अनुवादक



सामान्य तौर पर अधिकारी-कर्मचारी अंग्रेजी में काम करना पसंद करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि अंग्रेजी एक बेहतर भाषा है। शायद उनकी आदत में भी अंग्रेजी में काम करना शामिल है और उन्हें यह आसान लगता है या फिर पुराने बने फॉर्मेट अंग्रेजी भाषा में हैं और उनमें ही संशोधन करके काम चलाया जाना आसान है। क्या यह काम करने का एक सही तरीका है? हम हिंदी भाषा समझ सकते हैं, बोल भी सकते हैं यहाँ तक कि हमें हिंदी भाषा की फिल्में देखना, संगीत सुनना सब पसंद है। किंतु काम करने में हमें कठिनाई लगने लगती है, ऐसा क्यों है? क्या कभी सोचा है? ऐसा इसलिए है कि हम हिंदी में काम करना ही नहीं चाहते। हमें लगता है कि यदि हमने हिंदी में काम किया तो सबको लगेगा अरे इसे तो अंग्रेजी नहीं आती। हमने अंग्रेजी को इस कदर अपनी आदत में शामिल कर लिया है जैसे बिना अंग्रेजी हम गंवार कहलाएंगे। याद रखिए अंग्रेजी सिर्फ एक भाषा है आपके विद्वान होने का प्रमाण नहीं।

हिंदी को प्रयोग में लाने के लिए प्रयत्न करने की जरूरत है। हमें हिंदी नहीं आती, यह कहकर बचना एकदम गलत है। अगर हिंदी नहीं आती है तो उसके लिए भी कार्यालय में प्रशिक्षण दिया जाता है। जब हम हिंदी सुनकर समझ सकते हैं, अपनी बात को हिंदी में कह भी सकते हैं तो हम हिंदी का प्रशिक्षण लेकर उसमें काम करने का प्रयत्न क्यों नहीं कर सकते। जरूरत है तो सिर्फ हिंदी के प्रति अपनापन दिखाने की। हिंदी भाषी क्षेत्रों में शायद यह समस्या नहीं होती होगी लेकिन अहिंदी भाषी क्षेत्रों में अक्सर यह देखा जाता है कि हिंदी प्रशिक्षण हेतु यदि किसी अधिकारी - कर्मचारी को नामित किया जाता है तो वह ऐसे घबराता है जैसे न जाने उसके सर पर कितना बोझ

लाद दिया गया हो। इसके विपरीत उसे तो यह सोचकर खुश होना चाहिए कि उसे कुछ नया सीखने को मिलेगा। राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी शिक्षण योजना के तहत हिंदी प्रशिक्षण हेतु प्रबोध / प्रवीण / प्राज्ञ एवं पारंगत की कक्षाओं का संचालन किया जाता है। जिसमें अधिकारी / कर्मचारी अपना नामांकन भेज सकते हैं और हिंदी भाषा का ज्ञान अर्जन कर सकते हैं।

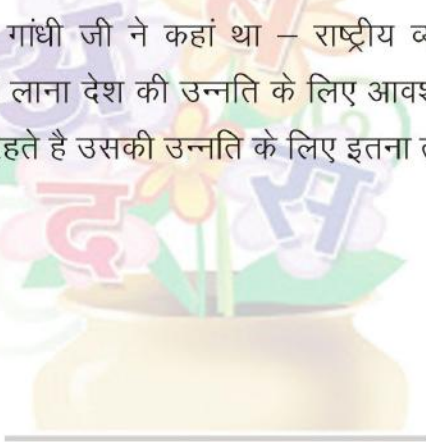
यदि किसी को हिंदी भाषा का ज्ञान है और फिर भी उसे कार्यालय के काम में दिक्कत आ रही है तो वे हिंदी कार्यशाला में भाग ले सकते हैं। चूंकि कार्यालयी हिंदी का स्वरूप सामान्य हिंदी से थोड़ा अलग है अतः यह सामान्य बात है कि हम हिंदी में काम करते समय अटकेंगे भी और गलतियाँ भी करेंगे पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम प्रयास करना छोड़ दें।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार सभी कार्यालयों में एक वर्ष में कम से कम चार और प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक कार्यशाला का आयोजन किया जाना अनिवार्य है। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा का ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों को हिंदी में काम करने में आ रही कठिनाईयों को दूर करना है। राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार कार्यशाला में ज्यादातर काम हिंदी में कराए जाने का अभ्यास करवाना चाहिए। हिंदी कार्यशाला हेतु सर्वप्रथम अधिकारियों एवं कर्मचारियों का नामांकन किया जाता है, जिसमें हिंदी के कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ही नामित किया जाता है। एक कार्यशाला का आयोजन सफल तभी हो सकता है जब उसमें भाग लेने वाले अधिकारी - कर्मचारी सच में सीखने की चाह रखते हों। प्रशिक्षक चाहे कितनी भी गहराई से अपने विषय को समझाए, यदि सीखने वाले में सीखने की इच्छा नहीं होगी तो कार्यशाला का कोई अर्थ ही नहीं होगा। कई बार यह भी देखने को मिलता है कि जब तक हिंदी कार्यशाला में हैं तब तक हिंदी पर बहुत ध्यान रहता है लेकिन कार्यशाला से बाहर निकलते ही "क्या हिंदी, क्या कार्यशाला" वाला रवैया होता है।

यह हम सबका कर्तव्य है कि हिंदी का प्रयोग अपने व्यवहार में लाएं। हिंदी का प्रचार प्रसार करें। यह कैसी



विडम्बना है कि हिंदी को उसके ही देश में उसका उचित स्थान दिलाने के लिए प्रयास करना पड़ रहा है। सिर्फ हिंदी दिवस मनाने से कुछ नहीं होगा। हिंदी में काम करने को अपना गौरव समझे। महात्मा गांधी जी ने कहा था – राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है। जिस देश में हम रहते हैं उसकी उन्नति के लिए इतना तो कर ही सकते हैं।



प्रतिबिम्ब

श्रीमती कमला नायक
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)



कोलकाता के बिरला हॉस्पिटल में भर्ती हुए रेणुका देवी को 5 दिन हो गए हैं, लेकिन अभी तक उनकी सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ है। उनकी तबियत खराब होने की खबर सुनकर, परिवार के सारे लोग उनसे मिलने आ गए थे। लेकिन रेणुका देवी को इंतजार था उनके पोते सुनील का जो अमेरिका में काम करता था। रेणुका देवी की दूसरे बेटे की बहु, सविता, जब से घर में आयी है, तब से वह देख रही है की दादी को हमेशा किसी का इंतजार रहता है। सुबह से लेकर शाम तक वह किसी का रास्ता देखती रहती थी। यह इंतजार सुनील के लिए था। अगर किसी दिन सुनील घर नहीं आ पाता था तो दादी की हालत खराब हो जाती थी। सविता हमेशा यही सोचती थी कि जब सुनील उनके घर का लड़का नहीं है तो दादी उसको इतना याद क्यों करती हैं और ये सवाल वह किसी से पूछ भी नहीं पाती थी। बाद में सविता को पता चला कि सुनील रेणुका देवी के बड़े पोते का दोस्त है। सुनील उनके पड़ोस में रहता था और बचपन

से ही उनके बड़े पोते के साथ खेलता और पढ़ता था। घर के सारे सदस्य सुनील से प्यार करते थे और सबके दिल में उसके लिए हमदर्दी थी क्योंकि वह ठीक से देख नहीं पाता था और उसके दिल में बचपन से एक छेद था। सुनील के पिताजी मामूली नौकरी करते थे इसलिए सुनील को पूरी तरह ठीक करने के लिए उनके पास पैसे नहीं थे। वह सुनील को भगवान के हवाले छोड़ दिए थे।

एक दिन संजय का पूरा परिवार गाड़ी से जा रहा था और उनके गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया। सभी लोग बुरी तरह घायल हो गए थे और किसी के बचने की उम्मीद नहीं थी। सभी घायल लोगों को पास के एक हॉस्पिटल में भर्ती किया गया। उस हॉस्पिटल में उस समय एक अंगदान शिविर चल रहा था। जख्मी लोगों की हालत देखकर, वहां के डॉक्टरों ने रेणुका देवी और उनके पति से निवेदन किया कि उनके बेटे, बहु और पोते की बचने की कोई उम्मीद नहीं है, अगर वह मृत्यु के बाद उनके अंगों को दान करने की अनुमति दे दें तो इससे किसी की जिंदगी सुधर सकती है। परन्तु रेणुका देवी की मानसिक स्थिति उस समय ऐसी थी कि वह कुछ समझ नहीं पा रही थी। संजय के परिवार में सबसे पहले उसका बेटा (रेणुका देवी का पोता) सौगात का ब्रेन-डेड हो गया था। यह देख उसके दादाजी ने उसके दिल और आँखों को सुनील को दान करने की अनुमति दे दी। उस दिन बेटा, बहु और पोता तीनों हमेशा के लिए चले गए। सुनील का ऑपरेशन ठीक-ठाक हो गया और सौगात की आँखें और दिल के मिलने से उसे मानो एक नयी जिंदगी मिल गयी। जिस दिन से रेणुका जी को पता चला कि उनके पोते की आँख और दिल सुनील को मिला हैं, तबसे वह हमेशा सुनील को ढूँढ़ने लगी। घर में जो भी खाना बनता, उसमें से कुछ अलग करके सुनील को भेजती थी। उसे दिन में दस बार बुलाकर उसकी आँखें और छाती सहलाती थी और उसे गले लगाती थी। सुनील के माता-पिता को ऐसा लगता था कि वह अब उनका बेटा नहीं बल्कि रेणुका जी का पोता बन गया है। रेणुका जी रोज सुबह जल्दी नहा- धोकर, पूजा-पाठ खत्म कर नाश्ता



बनाती थी और सुनील के आने का इंतजार करती थी । सुनील रोज स्कूल जाने से पहले और स्कूल से आने के बाद, दादाजी और दादीजी से जरूर मिलता था । कभी अगर उसकी तबियत खराब हो जाती तो रेणुका जी खुद उसे डॉक्टर के पास ले जाती थी और फिर उसे अपने पास रखकर उसकी सेवा करती थी । लगता था मानो उनकी जिंदगी सुनील में ही बसी थी । कभी-कभी उन्हें लगता था कि उस दिन अगर वह राजी हो जाती तो अपने बेटे और बहु का अंगदान करके, उन्हें भी किसी और के रूप में जिंदा रख सकती थी । समय गुजरने लगा और सुनील स्कूल से कॉलेज में चला गया । क्योंकि उसमें वह अपने पोते को देखती थी । रेणुका देवी सुनील के पढाई पर भी पूरा ध्यान देती थी । कुछ दिनों बाद रेणुका देवी के पति का भी स्वर्गवास हो गया और समय के साथ रेणुका जी अंगदान का एक बहुत बड़ा प्रचारक बन गई ।

हर साल अपने पति के पुण्यतिथि पर वह पूजा के साथ-साथ अंगदान पर लोगों में जागरूकता लाने के लिए कार्यक्रम का आयोजन भी करती थी । स्वयंसेवकों को अंगदान के बारे में समझाती और जो व्यक्ति राजी होता वह फॉर्म भर देता था । परन्तु देखा जाता था कि अधिकतर लोगों के परिवार के सदस्य उनके मृत्यु के बाद अंगदान के लिए राजी नहीं होते थे ।

अंगदानकारी और उनके परिवारवर्ग के मन में जो भ्रम धारणा रहती उसको दूर करने के लिए, स्वयंसेवक उनकी मदद करते हैं । यही स्वयंसेवक इस कार्यक्रम के असली हीरो होते हैं । डॉक्टरों के कहने के मुताबिक अगर किसी व्यक्ति के अंग को दूसरे के शरीर में ट्रांसप्लांट करना है तो इसके लिए यह प्रक्रिया एक निर्दिष्ट समय के भीतर संपन्न होनी चाहिए । उदाहरण के लिए अगर कोई व्यक्ति अपने आँखों का दान कर रहा है तो उसके ब्रेन - डेड होने के 4-6 घंटे के अंदर उसकी आँखों को दूसरे व्यक्ति के शरीर में ट्रांसप्लांट करना जरूरी होता है । दूसरी बात यह है कि अगर एक व्यक्ति अंगदान करने के लिए अपनी रजामंदी दे देता है, उतना काफी नहीं होता है । उसके मरणोपरांत उसके परिवारजनों को इसकी अनुमति देनी पड़ती है । बहुत बार ऐसा देखा गया है कि उस समय मृत्यु के बाद

परिवारजन अंगदान से मना कर देते हैं । ऐसे में, स्वयंसेवकों उन्हें समझाते हैं । परन्तु ज्यादातर यह कोशिश नाकामयाब रहती है ।

रेणुका देवी का सभी अतिथियों से यही निवेदन था कि "दयापूर्वक अपने मृत्यु के बाद किसी को अपने अंग दान कीजिये, इससे किसी और को नयी जिंदगी मिलेगी और उसके अंदर आप भी जियेंगे । आपका एक प्रतिबिम्ब उसके अंदर रह जायेगा, आप मरकर भी जी जायेंगे । आत्मा तो अमर है पर शरीर का अंग-प्रत्यंग अगर आपके जाने के बाद दान नहीं किया गया तो ये आपके साथ ही हमेशा के लिए चले जायेंगे ।" बहुत लोग रेणुका जी के इस कार्यक्रम को पसंद करते थे और अपने आँख, दिल, गुर्दा दान करने के लिए फॉर्म भरकर जाते थे । सारे स्वयंसेवक अंगदान करने वालों को प्रेरित करने के लिए सफलता के किस्से सुनाते थे । ऐसी ही एक कहानी एक फूल बेचने वाले की थी । उसके 9 साल के बेटे को मलेरिया हो गया था और उसे हॉस्पिटल में भर्ती कर दिया गया, परन्तु उसका बेटा बच नहीं पाया । दो दिन बाद, उसे ब्रेन-डेड घोषित कर दिया गया । बेटे का मृत शरीर लेने के लिए जब हॉस्पिटल ने 40000 रुपये मांगे तब गरीब फूलवाले के पास मुश्किल से 500 रुपये थे । उस समय रेणुका देवी के स्वयंसेवकों की मदद से उसके बेटे का शव उसे मिला । स्वयंसेवकों के समझाने पर वह अपने बेटे का अंगदान करने राजी हो गया । उसे इस बात का दुःख था कि उसका बेटा अब इस दुनिया में नहीं रहा पर इस बात की खुशी भी थी कि उसके बेटे के अंगों से 4 और लोगों को नयी जिंदगी मिलेगी ।

जब एक छोटा बच्चा या युवक ब्रेन-डेड घोषित कर दिया जाता है, उसके परिवार के लोग स्वाभाविक रूप से सदमें में चले जाते हैं । उस समय उन्हें अंगदान के लिए राजी कराना बहुत मुश्किल है । लोगों को कितना भी जागरूक करने की कोशिश करने पर किसी अपने की मौत के बाद लोग ऐसे सदमे में चले जाते हैं कि तब उनके अंगदान के बारे में सोचना भी नामुमकिन होता है । स्वयंसेवकों द्वारा परिजनों को समझाने के साथ-साथ काफी दिन उनके साथ बिताते थे ताकि उनका



हौसला बढ़ा सके । वो लोग अंग ग्रहण करने वालों के परिवारवर्ग के साथ भी निरंतर संपर्क में रहते थे, ताकि अंगदान ठीक समय पर हो पाए और उसके बाद जो प्रक्रिया होती है, उसमें भी मदद करते थे ।

अंगदान के बारे में जितना प्रचार चल रहा है, उससे लोगों में जागरूकता काफी बढ़ी है । मुंबई के जोनल ट्रांसप्लांट कोऑर्डिनेशन सेण्टर (TCC) ने पिछले एक साल में 600 ट्रांसप्लांट के कोऑर्डिनेटर्स को प्रशिक्षण दे चुकी है । हॉस्पिटल के अंदर और बाहर दोनों जगहों में कोऑर्डिनेटर्स का काम रहता था । भारत के युवा अगर इस कार्य में पूरे मन से लग जाए तो हमारे देश को अंगदान का कैपिटल बनने से कोई नहीं रोक सकता । आज के दिन भारत का अंगदान रेट 0.34 प्रति मिलियन है और हमें अगले 5 साल में इसे कम से कम 10 प्रति मिलियन तक पहुँचाना है । कोकिलाबेन धीरूभाई अम्बानी हॉस्पिटल के चेयरमैन, टीना अम्बानी इस दिशा में बहुत काम कर रही हैं । उनका नारा "वी कैन री-राइट समवन्स डेस्टिनी" को हमें देश के कोने-कोने तक पहुँचाना चाहिए । इस कार्य में सरकार के साथ बहुत सारे NGOs भी जुड़े हुए हैं । नेशनल ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट आर्गेनाइजेशन, रीजनल ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट आर्गेनाइजेशन, जोनल ट्रांसप्लांट कोऑर्डिनेशन सेण्टर इनमें से कुछ हैं । महाराष्ट्र और गुजरात सरकार ने दसवीं कक्षा की किताबों में अंगदान पर भी एक अध्याय शामिल किया है । पुलिस और परिवहन संस्थाओं को भी ये आदेश दिया गया है कि वह अंगदान के लिए अंग स्थानांतरण करने में पूरी मदद करे ताकि निर्धारित समय के अंदर ये प्रक्रिया संपन्न किया जा सके । अंगदान एक जटिल कार्य है और इसके बारे में देश के सभी लोगों को ज्ञान होना चाहिए । हर साल 13 अगस्त को विश्व अंगदान दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

एक अंगदानकर्ता और अंग ग्रहणकर्ता के बीच में एक अपूर्व रिश्ता बन जाता है । यह सम्बन्ध हर सीमा, बंधन और भिन्नताओं से परे है । मृत व्यक्ति का एक प्रतिबिम्ब, दूसरे व्यक्ति के अंदर समा जाता है । अंगदान को हम "गिफ्ट ऑफ लाइफ" कह सकते हैं । अगर सब लोग इस संदेश को सही मायने में समझ पाएंगे तो विश्व में अंगदानकारियों की कमी कभी नहीं रहेगी । रेणुका देवी अपने पति की हर पुण्यतिथि पर ऐसा कार्यक्रम आयोजित करती थी क्योंकि उनके मन में कहीं न कहीं यह दुःख जरूर था कि उन्होंने अपने बेटे और बहु का अंगदान करने की अनुमति नहीं दी थी । सौगात की आँखें और दिल, सुनील को दान करने से, वह सौगात को सुनील में देख सकती थी । अपनी कॉलेज की पढाई खत्म करके सुनील नौकरी करने अमेरिका चला गया । रेणुका देवी खुश थी कि वह अमेरिका में नौकरी करता था, लेकिन उसे अपने से दूर भेजकर उन्हें हमेशा उसकी याद आती थी । जब रेणुका देवी हॉस्पिटल में भर्ती थी, तो उनके सारे परिवारवाले उनके पास थे पर सुनील नहीं था । उनको यह लग रहा था कि सुनील को देखे बिना वह ठीक नहीं हो सकती । डॉक्टरों ने भी उनके परिवारवालों को सुनील को बुलाने बोला । खबर मिलते ही सुनील दो दिन में अमेरिका से सीधा दादी के सामने आ खड़ा हो गया । उसे देखते ही रेणुका देवी बिस्तर से उठकर खड़ी हो गयी और उसे गले लगा लिया । जो हफ्तों तक बिस्तर से उठ नहीं पा रही थी, वह किस तरह सुनील को देखकर ठीक हो गयीं, यह देख सब आश्चर्यचकित रह गए । असलियत यह थी कि अपने पोते के प्रतिबिम्ब सुनील को देख वह दोबारा जिंदा हो गयी थी ।

~~~~~





## एफ 5

श्री शैलेंद्र कुमार  
वरिष्ठ अनुवादक  
मो. 9471111919



रोटी, कपड़ा, मकान, मोबाइल, इंटरनेट, टीवी, डीटीएच, मोटरसाइकल, फ्रिज, डेस्क टॉप, लैपटॉप, वाशिंग मशीन, एसी, वैक्यूम क्लीनर, म्यूजिक सिस्टम, चार पहिया वाहन, इंडक्शन, ओटीजी, हेडफोन, ब्लूटूथ हेडफोन, साबुन, सर्फ, टूथ पेस्ट, शैम्पू, अच्छा कपड़ा, ब्रांडेड कपड़ा, शादी, मंहगा कपड़ा, सोना, ब्लेड, शेविंग क्रीम, शेविंग फोम, शेविंग कीट, ट्रिपर, हेयर रिमूवर, एचडी टीवी चैनलस, एलसीडी टीवी, एलईडी टीवी, ओएलईडी, लग्जरी कार, कार परफ्यूम, टॉयलेट क्लिनर, टॉयलेट परफ्यूम, चूना पेंट, पेंट, डिस्टेंपर, प्लास्टिक पेंट, वेदर कोट (बाहरी दीवार के लिए अलग), कार क्लिनर, दो पहिया वाहन बीमा, चार पहिया वाहन बीमा, जीवन बीमा, वाहनों की एक्सटेंडेड वारंटी, टर्म प्लान, मेडिकल इंश्योरेंस, एटीएम कार्ड, क्रेडिट कार्ड, यूपीआई, रेल यात्रा, हवाई यात्रा, डिश वाशर, पेटीएम, अमेज़न, फ्लिपकार्ट, न्यासा, मितरा, चाभी रिंग, रिमोट बैटरी, ट्रिपर बैटरी, दो पहिया वाहन बैटरी, चार पहिया वाहन बैटरी, बाजार, मॉल, चप्पल, जूते, लोफर जूते, बूट, रात्री के लिए अलग कपड़े, सुबह दौड़ने के लिए अलग कपड़े, योग के लिए मैट, खेलने के लिए अलग जूते, घड़ी, स्टाइलिश घड़ी, मोबाइल रिचार्ज, पावर बैंक, डीटीएच रिचार्ज, मोबाइल एप, हैंड ब्लेंडर, मिक्सी, शू स्टैंड, गहने, ग्लास टॉप गैस चूल्हा, स्लीपर यात्रा, एसी प्रथम वर्ग से यात्रा, इकोनॉमी क्लास, बिजनेस क्लास, मोटी गले की चेन, डियोडरेंट, परफ्यूम, शराब, बीयर, देसी शराब, शैंपेन, व्हीस्की, रम, चार्जर केवल, टाइप सी, यूएसबी, पेन ड्राइव, मोबाइल कवर, मांस, हेयर डाई, सिनेमा, टीवी सीरियल, तलवार, चाकू, नेटपिलक्स, हॉटस्टार, डिज़नी प्लस, अमेज़न प्राइम, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, झगड़ा, ताकत, छोटा, बड़ा, क्लास, हाई क्लास, लो क्लास, अपना, पराया, धन, संपत्ति, मेरा, तुम्हारा, मेरा अच्छा, तुम्हारा खराब, अहंकार, सेल्फी, पलंग, सोफे, गद्दे, पर्दे,...

पहली तीन चीजों को छोड़कर क्या हमारी जिंदगी इन अन्य चीजों से भरी पड़ी है ? क्या आपकी जिंदगी इन चीजों से भरी पड़ी है ? यदि ऐसा है तो इसका मतलब है कि हम बहुत सारे अनावश्यक भौतिक व मानसिक बोझ के साथ जिंदगी जी रहे हैं। हम गुणवत्ता भरी जिंदगी से दूर होते जा रहे हैं। इनमें से किसी चीज को भी अगर हम हटाने की कोशिश करते हैं या हटाने की सोचते हैं तो लगता है कि इसके बिना जिंदगी पूरी तरह संभव नहीं है। हो सकता है इन सभी चीजों का उपभोग आप नहीं करते हों परंतु आपके दिमाग में ये सभी चीजें रहती हैं या इनमें से ज्यादातर चीजों से आप पूरी तरह से जुड़े रहते हैं। हर वो चीज जो हम रखते हैं उन सभी चीजों के रखरखाव की आवश्यकता जाहिर तौर पर होती है और इन चीजों से धिरे रहने के कारण हम अपने सबसे महत्वपूर्ण चीज की तरफ ध्यान देना भूल जाते हैं। अगर हम नागाओं को देखें तो हम पाएंगे कि उनके पास कुछ भी नहीं होता है कम से कम ऊपर लिखी चीजों में कुछ भी नहीं। क्या उन्हें इन चीजों की आवश्यकता महसूस नहीं होती ? क्या वे इंसानी प्रवृत्ति के नहीं होते हैं ? या वे जिंदगी के उस मखमली एहसास को जी नहीं पाते जो हम आप जी लेते हैं ? आखिर ऐसा क्या होता है जो उन्हें यह नहीं लगता कि उनके पास भी वो सारी चीजें होनी चाहिए जो हमारे आपके पास हैं और जिसके बिना हमें जिंदगी में एक सूनापन लगने लगता है। उदाहरण के तौर पर हम बिना मोबाइल के घर के बगल वाली बाजार में भी निकलते हैं तो हमें लगता है कि कोई बहुत आवश्यक चीज छूट गई है। तो फिर इन नागाओं के साथ ऐसा क्यों नहीं होता जबकि उनके पास बहुत सारी आवश्यकता की वस्तुएं नहीं होती हैं या यों कहें कि उनके पास कुछ भी नहीं होता इस शरीर या देह के अलावा। नागाओं को ये पता होता है कि ये जो देह है यही बहुत कुछ है। इसलिए वे इस शरीर/देह को ही लेकर चलते हैं और वे जानते हैं कि इस देह में जरूरत से ज्यादा चीजें हैं और उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज जो है वो है अनुभव, जिंदगी का अनुभव, इस देह का अनुभव। एक 50-55 साल का व्यक्ति वासुदेव जो एक आश्रम चलाता था उसके पास किसी ने एक बहरे आदमी को छोड़ दिया और कहा कि यह मेरे किसी काम का नहीं है, इसे अपने पास रख लो। वासुदेव ने



सोचा यह मेरे किस काम का है फिर भी उसने उसे अपने साथ रख लिया और कुछ छोटे-मोटे कार्यों में लगा दिया। एक दिन वह आश्रम के बाहर कुछ काम कर रहा था तभी अचानक वह चिल्लाने लगा और कहा कि तेज बारिश आने वाली है बाहर पड़े सारे सामान घर के अंदर ले चलो। वासुदेव को लगा ये पागल हो गया है फिर भी उसने कहा ठीक है और उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। कुछ ही देर बाद घने बादलों ने अपना डेरा ऊपर बना लिया। वासुदेव को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। वासुदेव ने स्वयं के द्वारा जंगलों में रहकर जो ज्ञान प्राप्त किया था वो अद्भुत था। परंतु यह कला उसे नहीं आती थी। उसे इस बात का आश्चर्य हुआ कि आखिर इसे कैसे पता चला कि बारिश होने वाली है। वासुदेव एक विलक्षण प्रकृति के व्यक्ति थे। उन्हें ये बात बहुत खली कि बारिश होने की स्थिति को वे कैसे नहीं पता कर पाएं और एक साधारण से व्यक्ति को कैसे इस बात की अनुभूति हो गई। एक जिद के साथ वासुदेव एक ही स्थान पर कई महीने बैठे रहें और धीरे-धीरे उन्हें मौसम की स्थिति की अनुभूति होने लगी और अब उन्होंने भी अपने आप को इस काबिल बना लिया कि वो बता दें कि मौसम का मिजाज़ कब कैसा होने वाला है। इसका मतलब है कि जब आप इस शरीर एवं इसमें होने वाले सूक्ष्म परिवर्तन को जान जाते हैं आपको कुछ और जानने की जरूरत नहीं होती है। वर्तमान समय में हम सबकुछ जानने का प्रयास करते हैं। आज की दुनिया में जानने को है भी बहुत कुछ है परंतु इसमें इस मानव देह को जानने का वक्त हम नहीं निकाल पाते हैं। अनुभव से बड़ा कुछ नहीं। अनुभव मतलब प्रकृति का अनुभव। प्रकृति में मौजूद सभी चीजों का अनुभव। यह जितना होता जाएगा उतना आपको यह झुका देगा। आप अनुभव से जब लद जाते हैं आप झुक जाते हैं फलों से लदे पेड़ की तरह। आप कम प्रतिक्रियाशील हो जाते हैं। आप ग्रहणशील हो जाते हैं। जितनी अधिक ग्रहणशीलता, उतनी कम प्रतिक्रियाशीलता।



## जीवनदान

श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव  
पत्नी - लोकेश चंद्र लाल  
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



ईश्वर द्वारा प्राप्त जीवन, प्राणी के लिए अतुलनीय उपहार है। इस उपहार को प्राणी किस तरह उपयोग में लाते हैं यह उनपर निर्भर करता है। हम अपने जीवन में केवल अपने बारे में ही सोचते हैं और तदनुसार ही कार्य करते हैं। समाज में विरले प्राणी ही स्वयं से अधिक समाज कल्याण के बारे में सोचते व कार्य करते हैं। ये दाल में नमक के बराबर है और इनके कारण ही इंसानियत आज भी जीवित है।

फोन पर बात करते ही अमरेश के पसीने छूटने लगे, पैर डगमगाने लगे। ऐसा लग रहा था मानो शरीर की ताकत ही समाप्त हो चुकी है। कंपकपाते हुए होठ कुछ कहने सकने में असमर्थ है। यह सब देखकर नीलू ने अमरेश को संभालते हुए कारण जानने की कोशिश की। अमरेश ने बताया कि नेशनल हाइवे पर संजू की दुर्घटना हो गई। यह सूनकर नीलू के होश-ओ-हवाश उड़ गए। दोनों ने एक-दूसरे को संभालने की असफल कोशिश की और एम्स अस्पताल की ओर चल पड़े। दोनों की हालत उस पक्षी की तरह हो रही थी जिसके दोनों पर कट गए हों और सामने मुँह बाए बाज दिख रहा हो। दोनों ही कुछ सोचने-समझने और कुछ कह पाने की स्थिति से परे थे। अस्पताल पहुँचते ही हृदय की धड़कन दोगुनी रफ्तार से चलने लगी। विचार आने लगा - संजू कैसा होगा? संजू, नीलू और अमरेश की एकमात्र संतान है। उसके जन्म से लेकर अबतक की मृदुल स्मृतियाँ दोनों के आँखों के सामने नाचने लगी। कभी संजू का हंसता हुआ चेहरा बार-बार सामने आ रहा था और कभी खून से लथपथ। यह बात दोनों के विचलित कर रही थी।

नीलू ने कहा, "डॉक्टर साहब, हम संजू के माता-पिता हैं। कैसा है हमारा संजू? हमें उससे मिलना है।" देखिए संजू की हालत खराब है। बहुत सारा खून बह गया है और इस समय अस्पताल में उसके रक्त समूह का खून भी उपलब्ध नहीं है।



डॉक्टर के इस कथन ने अमरेश को व्यथित कर दिया । अपनी बची-खुची हिम्मत को जुटाकर अमरेश ने कहा, "संजू ठीक तो हो जाएगा न ?" "डॉक्टर ने कहा अब सब भगवान के हाथ में है ।" तो क्या हम कुछ नहीं कर सकते हैं डॉक्टर साहब ।" "हाँ, कर सकते हैं अगर खून का इंतज़ाम जल्द से जल्द हो जाए तो ।" "तो ठीक है, मैं कहीं से भी संजू के लिए खून का इंतज़ाम करूँगा ।" अपने अंदर की मरी हुए हिम्मत को ज़िंदा करके अमरेश ने कहा ।



पूरे आठ घंटे हो गए परंतु अमरेश को कहीं से भी रक्त की व्यवस्था नहीं हो पा रही थी । चूंकि संजू का रक्त समूह O निगेटिव (O-) था इसलिए रक्तदाता को लेकर काफी असुविधा हो रही थी । अब अमरेश हारा हुआ—सा महसूस करने लगा था । शहर के हर अस्पताल व हर ऐसे जगह वह गया जहाँ से रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती थी परंतु हर जगह उसे निराशा ही हाथ लगी । अमरेश के पास सबकुछ होते हुए भी आज अपने—आप को खाली महसूस कर रहा था । आज उसके लिए रक्त से बढ़कर दुनिया में कोई चीज़ नहीं थी । उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ये उसके ही पाप का फल है जिससे आज वह और उसका परिवार इस स्थिति में खड़ा है । तो क्या इसका जिम्मेदार वह खुद है ? उसे लग रहा है कि हमारे पाप का फल इस जन्म में ही भोगना पड़ता है । आज उसे वह रोता हुआ 16 वर्षीय बच्चा नजर आ रहा था जिसे 16 वर्ष पहले अमरेश ने रक्त देने से मना किया था । उस बच्चे की माँ को रक्त की अत्यंत आवश्यकता थी परंतु अमरेश को रक्तदान करने से भय लगता था । भय सेवा पर हावी रही और अमरेश ने मना कर दिया था । इस ग्लानी से अमरेश आज तक नहीं ऊबर पाया था । बार—बार अमरेश ईश्वर से अपने किए की माफी मांग रहा था और इसका

दंड उसके संजू को न देने गुहार लगा रहा था । इतने में फ़ोन की घंटी बजी । अमरेश को अब और कोई अप्रिय ख़बर सुनने की हिम्मत न थी । बार—बार बजते हुए फोन को अमरेश को उठाना पड़ा । फोन अस्पताल से था । अमरेश के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ पड़ी जब उसने सुना कि रक्तदाता (Blood Donor) मिल गया है । आज अमरेश को अहसास हुआ कि समाज में ऐसे लोग भी हैं जिनमें मानवता कायम है । उनके द्वारा उठाया गया एक छोटा—सा कदम एक ही नहीं वरन् कई लोगों को ज़िंदगी प्रदान कर सकता है ।

उस रक्तदाता के दान से सिर्फ संजू को ही नहीं वरन् अमरेश और नीलू को भी नई ज़िंदगी मिली । संजू के हंसते हुए चेहरे को देखकर अमरेश ने मन ही मन यह प्रण लिया कि वह नियमित रूप से रक्तदान करेगा तथा अपने परिचितों को भी इसके लिए प्रेरित करेगा ।

एक व्यक्ति द्वारा उठाया गया कदम पूरे समाज को तो नहीं लेकिन बहुतों की ज़िंदगी अवश्य बदल सकता है । इसलिए समाज की नहीं अपितु पहले अपनी सोच बदलने की आवश्यकता है ।



~~~~~

पिता

श्री शैलेंद्र कुमार
वरिष्ठ अनुवादक
मो. 9471111919



अब घर, घर नहीं लगता
क्योंकि तुम चले गए।
पलंग, दरवाजे सब वैसे हैं
वैसी ही है पंखे की चाल
फिर भी अब घर, घर नहीं लगता
क्योंकि तुम चले गए।
हर पहर आया और मौसम भी
यूं ही बीत गया ये साल
ना धरती बदली ना आसमां
वक्त की भी है वैसी ही चाल
फिर भी अब घर, घर नहीं लगता
क्योंकि तुम चले गए।
गमलों की मिट्टी सूख गई
बारिश से मिली है पौधों को नई चाल
वही पीपल है, वही गलियारा
है दिल में वही मशाल
फिर भी अब घर, घर नहीं लगता
क्योंकि तुम चले गए।
नए पेंट से दरवाजे चमके
चूने से चमक रही है दीवार
बदली नहीं है छत की टंकी
वैसी ही है नल की धार
फिर भी अब घर, घर नहीं लगता
क्योंकि तुम चले गए।

~~~~~

## कविता

श्रीमती मीनाक्षी आचार्य  
पर्यवेक्षक



पहले तुम कभी भी कही भी आ जाती थी,  
दिन हो या रात, धूप हो या बरसात,  
घर हो या बाहर, बस तुम आ जाती थी,  
पर अब बताओ "कविता"  
तुम क्यों नहीं आती ?  
हाँ, तुम आती हो.. अभी भी,  
पर तब मैं और अब मैं,  
बहुत ही बड़ा फासला है,  
पर इस 'कवि' के मन में  
बचा अभी भी हौसला है,  
कि तुम्हारा आना यँ,  
बंद नहीं हो सकता है,  
तुम्हारे कदम धीमे हो सकते हैं,  
पर रुक नहीं सकते,  
तुम तो सबकी रुह की आवाज़ हो,  
एहसासों की धूरी को पकड़ कर  
अल्फाजों का रूप लेकर,  
"कविता" तुम कागज़ पर उतरती हो,  
हाँ पहले तुम कभी भी कहीं भी आ जाती थी,  
पर अब बताओ "कविता" तुम क्यों नहीं आती ?

~~~~~



राजभाषा हिंदी की वर्तमान दशा

श्री आशीष रंजन
आशुलिपिक



भाषा भावों और विचारों की संवाहक होती है। भाषा का स्वरूप हमेशा बदलता रहता है, और ऐसा हम सभी भाषाओं के बारे में कह सकते हैं। भारतीय संविधान 'संविधान के अनुच्छेद 343 राजभाषा अधिनियम 1963 (संशोधित 1967) के अनुसार 8वीं अनुसूची में 22 भाषाओं की सूची है, जिन्हें अनुसूचित भाषाओं के रूप में संदर्भित किया गया है।' स्वाधीनता आंदोलन के दौरान हिंदी भाषा में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं ने देश को आज़ाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा भारतीयों को एक सूत्र में बांधें रखा। स्वतंत्रता के पश्चात् भले ही हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया और सरकार द्वारा इस हेतु सराहनीय कदम उठाए गए हैं परंतु अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग अनवरत् चल रहा है।

अंग्रेजी भारत में फैली हुई है और इसका व्यापक रूप से उपयोग भारत के अभिज्ञात वर्ग, नौकरशाही एवं कंपनियों द्वारा किया जाता है। यह अपने लिखित रूप से विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिकांश दस्तावेजों के अधिकारिक संस्करण में अंग्रेजी का उपयोग किया जाता है। ध्यान देने की बात यह भी है कि वर्तमान में देश की आबादी का 10% ही अंग्रेजी बोली या समझी जाती है। इसका मतलब यह है कि 90% भारतीय अंग्रेजी को बोलते या समझते नहीं हैं। भले ही हिन्दी की वैश्विक स्थिति काफी बेहतर है विश्व के प्रायः सभी महत्वपूर्ण देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन हो रहा है। परंतु विडंबना यह भी है कि विश्व में अपनी स्थिति के बावजूद हिन्दी भाषा अपने ही घर में उपेक्षित जिंदगी का शिकार हो रही है। अंग्रेजी बोलने वाले को तेज़-तर्रार, बुद्धिमान एवं हिन्दी बोलने वाले को अनपढ़ गंवार जताने की परंपरा रही है।

केन्द्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों की पहल के साथ कई सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाएं हिंदी को एक लिंक भाषा के रूप में प्रसार के लिए काम कर रहे हैं। हम जानते हैं कि किसी भी आजाद देश की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है, जो उसका गौरव होती है तथा राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के स्थायित्व के लिए पूरे देश में उसका उपयोग होता है। इसी तरह देश की अपनी एक राजभाषा भी होती है। राजभाषा मतलब सरकारी कामकाज की भाषा और जिससे एक आम नागरिक भी सरकार के काम को समझ सके। किसी भी भाषा को सरल बनाने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, सरलता और वैज्ञानिकता आदि सब प्रकार के भावों को प्रकट करने का सामर्थ्य आदि गुण हिंदी भाषा में आसानी से देखने को मिलते हैं।



हम मजदूर हैं

श्री सतीश कुमार
वरि. लेखापरीक्षक



ऐ सड़क माना कि अपनी लंबाई पर तू इतराता है ।
गाँव से शहर, शहर से राज्य को मिलाकर इटलाता है ।
बड़ी गाड़ियां गुज़रती है तेरे पथ से
तब तो तू ज़रा न थरता है ।
हर मोड़ पर तू तो बड़ा बलखाता है ।
आज तेरे पथ पर हम मजदूर निकले हैं,
आज तू भी समझ रहा है कि मजबूर निकले है ।
पैरों में छाले जो तूने हमें दिए हैं, तू ये समझ न पाया
कि तेरे पथ पर बेकसूर निकले है ।
जो तपिश और दर्द तूने हमारे पैरों को दी ,
तेरा दिल ज़रा ना पिघला
कि तुझे बनाने वाले हम मजदूर निकले है ।
अच्छा था जो तब मिट्टी का था,
सबके लिए तेरा नजरिया एक समान था ।
अमीर गरीब का फर्क न था,
किसी का करता न अपमान था ।
ना तपिश थी तुझ में, ना गुमान था,
गड्डे कीचड़ों से घिरा तेरा जहान था ।
तुझे बनाकर हम मजदूरों ने दिलाया तेरा सम्मान है ।
बड़ा होकर तू अब करता गरीब मजदूरों का ही अपमान है ।
तेरे अकड़ ने ले ली हम कई मजदूरों की जान है ।
आज दिखाऊंगा तुझे हिम्मत मजदूरों की,
लांघ जाऊंगा तुझे अपने पैरों के बल पर ही ।
लाख जुल्म तू कर ले मुझपर
दिखा दूंगा तुझे अब पैदल चलकर ही ।

काला रंग दिया था हमने तुझे नजर से बचाने को,
अब गुजरूंगा तेरे पथ से तुझे अपने खून से नहलाने को ।
देखता हूँ तेरा दिल कब पसीजता है, देख एक मजदूर अपने
कंधो पर जिम्मेवारी को कैसे खींचता है ।
हंस रहा होगा ए सड़क तू मजदूर है
इसलिए सिर्फ तू ही मुझ पर चलता है ।
तुझे पता तो होगा,
मुश्किल हालातों में हमारी कोई नहीं सुनता है ।
कोई मजदूर कभी सपने नहीं बुनता है,
मर जाए भी तो हमें कौन ढूंढता है ।
हंसो सब मुझ पर, हम तो हमेशा से ही मजबूर हैं ।
क्या करूँ किस्मत ही ऐसी पाई है, कि हम मजदूर है ।



संगीत थेरेपी

श्री विनय सिंह

पति— श्रीमती मोनिका चौहान

कनिष्ठ अनुवादक



वैसे तो हम सब अनेक थेरेपी के बारे में जानते हैं जैसे— फिजियोथेरेपी, स्पीच थेरेपी, बिहेवियरल थेरेपी इत्यादि, पर क्या आपने संगीत थेरेपी के बारे में सुना है ? विशेषज्ञों का कहना है कि संगीत थेरेपी बहुत ही प्रभावशाली होती है । यह तनाव जैसे रोगों एवं मानसिक रोगों से निजात दिलाने में काफी कारगर साबित होती है । यह सच है कि भारत में संगीत की परंपरा बहुत पुरानी रही है । भारत के शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति वेद से ही मानी जाती है । भारत के चार प्राचीन वेदों में से एक वेद है — सामवेद । सामवेद के चार उपवेद हैं । जिसमें एक उपवेद गंधर्व वेद है । इसमें संगीत के बारे में विस्तार से बताया गया है । संगीत थेरेपी का भारत में अभी उतना प्रचलन नहीं है जितना अन्य थेरेपी का है । संगीत का अर्थ उन ध्वनि तरंगों से है जो मन को शांति दे, जो मन को स्थिरता दें ।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर व्यक्ति किसी न किसी बात को लेकर तनाव में रहता है । इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का इस्तेमाल करते-करते इंसानों की याददाश्त कमजोर होने लगी है । ऐसे में हमें अपने मन को शांत रखने की आवश्यकता होती है और इसमें संगीत थेरेपी बहुत ही कारगर साबित होती है । हो सकता है कि अच्छे परिणाम मिलने में थोड़ा समय लग जाए । रोगी को शुरुआत में थोड़ा ठीक न लगे या फिर वह इसका प्रतिरोध करें किंतु धीरे-धीरे इसके अच्छे परिणाम मिलने लगते हैं । संगीत में नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचार में बदलने की क्षमता होती है ।

संगीत थेरेपी के माध्यम से इलाज करने का खर्च थोड़ा महंगा होता है । इसमें रोगी की समस्या एवं उसके स्वाभाव के

हिसाब से संगीत तैयार किया जाता है और इसे मरीज को सुनाया जाता है । जैसे-जैसे मरीज में सुधार होने लगता है संगीत में उसी के अनुसार बदलाव किया जाता है । इसलिए यह थेरेपी थोड़ी मंहगी पड़ती है । किंतु यह जरूरी नहीं है कि आप विशेषज्ञ से ही मदद ले । देखा गया है कि प्रतिदिन संगीत सुनने वाला व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अत्यधिक स्थिर एवं खुशमिजाज होता है । यहाँ संगीत का मतलब आजकल के कानफाड़ गानों से नहीं है ।

तनाव एवं मानसिक रोगों के अतिरिक्त भी कई बीमारियां हैं जिनका इलाज भी संगीत थेरेपी से किया जा सकता है जैसे— अस्थमा, उच्च या निम्न ब्लडप्रेसर । इसके लिए विशेष प्रकार की राग का उपयोग किया जाता है । अलग-अलग बीमारियों के लिए अलग अलग राग का उपयोग किया जाता है । इनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं —

1— हृदय रोग :— इस रोग में तीव्र संगीत नहीं सुनना चाहिए । इसमें राग दरबारी या राग सारंग से संबंधित गीत सुनना लाभदायक होता है । इस राग से संबंधित कुछ गीत हैं — तू प्यार का सागर है (सीमा), मेरे महबूब कयामत होगी (मि. एक्स इन बॉम्बे), बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम (साजन) ।

2— याददाश्त :— जिन लोगो को लगता है कि उनकी याद रखने की क्षमता कम हो रही है उन्हें राग शिवरंजनी से संबंधित गीत सुनना लाभदायक होता है । इसमें वीणा वादन और बांसुरी सुनने से भी लाभ मिलता है । इस राग से संबंधित कुछ गीत हैं — जाने कहाँ गए वो दिन (मेरा नाम जोकर), दिल के झरोखे मे तुझको बिठाकर (ब्रह्मचारी), जिंदगी की राहों में (कसम तेरी कसम) ।

3— कमजोरी :— इस रोग में व्यक्ति को काम करने में असमर्थता महसूस होती है । उसे शरीर में आलस जैसा महसूस होता रहता है । इसमें तीव्र संगीत सुनना भी अच्छा होता है । इसमें राग जयजयवंती से संबंधित गीत सुनना लाभदायक होता है । इस राग से संबंधित कुछ गीत हैं — मोहब्बत की राहों मे चलना संभलके (उड़न खटोला), तुम्हें जो भी देख लेगा (मजबूर),



मनमोहना बड़े झूठे (सीमा)

4— अनिद्रा :— इस रोग में रोगी को आवश्यकतानुसार विश्राम नहीं मिल पाता जिसका स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसमें राग भैरवी एवं राग सोहनी सुनना फायदेमंद होता है। इस राग से संबंधित कुछ गीत निम्नलिखित हैं — किसी नजर को तेरा इंतजार (एतबार), दुनियाँ बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई (हिंदुस्तान की कसम), दोस्त दोस्त न रहा (संगम)।

5— डिप्रेशन या मनोरोग :— इसमें व्यक्ति स्वयं को हारा हुआ व उदास महसूस करने लगता है। उसकी सोच लगातार नकारात्मक होती जाती है। इस रोग में राग बिहाग व राग मधुवंती सुनना लाभदायक होता है। घुंघरू एवं तबला की ध्वनि भी लाभदायक होती है। इस राग से संबंधित कुछ गीत हैं — तुम तो प्यार हो (सेहरा), तुझे देने को मेरे पास कुछ नहीं (कुदरत), मेरे सुर और तेरे गीत (गूंज उठी शहनाई)।

6— पित्त रोग :— इसमें व्यक्ति का शरीर नाजुक हो जाता है। इन्हें गर्मी सहन नहीं होती। इनकी त्वचा पीली एवं नर्म होती है और फुंसियों एवं तिलों से भरी हुई होती है। इसमें राग खमाज सुनने से लाभ मिलता है। इस राग से संबंधित कुछ गीत हैं — अच्छा जी मैं हारी चलो मान जाओ (काला पानी), कुछ तो लोग कहेंगे (अमर प्रेम), बड़ा नटखट है किशन कन्हैया (अमर प्रेम) इत्यादि।

7— खून की कमी :— इसमें व्यक्ति का स्वाभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और उसका चेहरा सूखा रहता है। इसमें राग पीलू सुनने से लाभ मिलता है। मृदंग एवं ढोलक की ध्वनि भी लाभकारी है। इस राग से संबंधित कुछ गीत हैं — नदिया किनारे घिर आए बदरा (अभिमान), आज सोचा तो आँसू भर आए (हँसते जख्म), मैंने रंग ली आज चुनरिया (दुल्हन एक रात की) इत्यादि।

8— रक्तचाप :— उच्च रक्तचाप में धीमी गति का संगीत एवं निम्न रक्तचाप में तीव्र गति का संगीत लाभकारी होता है। उच्च रक्तचाप में चलो दिलदार चलो (पाकिजा), नीले गगन के तले (हमराज) आदि जहाँ डाल-डाल पर (सिकंदरे आजम), पंख

होते तो उड़ आती रे (सेहरा) जैसे गीत सुनना लाभकारी होता है।

9— अस्थमा :— इस रोग में आस्थादृभक्ति पर आधारित गीत व संगीत सुनने व गाने से लाभ होता है। इस रोग में राग मालकोंस व राग ललित से संबंधित गीत सुनने से फायदा होता है। इस राग से संबंधित कुछ गीत हैं — आधा हैं चंद्रमा (नवरंग), सौ बार जनम लेंगे (उस्तादों के उस्ताद), पग घुंघरू बांध मीरा नाची (मीरा)।

10— सिरदर्द :— इसमें राग भैरव सुनना लाभदायक होता है। इस राग से संबंधित कुछ गीत हैं — राम तेरी गंगा मैली (शीर्षक), सोलह बरस की बाली उम्र को सलाम (एक दूजे के लिए), भोर भए पनघट पर (सत्यम शिवम सुन्दरम)।

आपने बहुत बार देखा होगा कि कहीं अगर बहुत तेज ध्वनि में गाने बज रहे हैं तो कुछ लोगों के कदम स्वयं ही थिरकने लगते हैं, या फिर कुछ लोगों का शरीर उस संगीत के लय / ताल के हिसाब से प्रतिक्रिया देने लगता है। इसका अर्थ यह है कि उन लोगों का शरीर उन ध्वनि तरंगों को महसूस करता है और उस व्यक्ति के स्वभाव के हिसाब से प्रतिक्रिया देता है, जैसे — यदि आप भावुक प्रकृति के हैं तो आपको धीमी गति का संगीत बहुत ही आरामदायक लगेगा। कई बार तो संगीत सुनते — सुनते इंसान की आँखें भर आती हैं। यकीन मानिए यह कोई दिखावा नहीं होता बल्कि वह इस संगीत को स्वयं में महसूस करता है। इसी प्रकार बच्चे भी अपनी माँ से लोरी सुनकर बहुत ही स्थिर व शांत महसूस करते हैं और आराम से सो जाते हैं। यदि आप भी प्रतिदिन 20 मिनट के लिए अपनी पसंद का संगीत सुनते हैं तो आपका मन भी शांत एवं प्रसन्न रहता है। तो फिर देर किस बात की है। आज से ही घर बैठे इसे अपना कर देखें।







स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति का मानसिक, शारीरिक और सामाजिक कल्याण की भावना है न कि केवल बीमारियों से मुक्त होना है ।

स्वास्थ्य पर तंबाकू के बुरे प्रभावों के बारे में लोगों को शिक्षित और जागरूक करने के लिए कई अभियान, कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं । ये तो हम सभी जानते हैं कि तंबाकू या अन्य ऐसे उत्पादों को खाने से कुछ समय तक क्षणिक खुशी मिलती है । लेकिन धीरे-धीरे यह जीवन से दूर ले जाता है । ऐसा भी हो सकता है कि तंबाकू का सेवन करने के बाद इंसान ऊर्जावान महसूस करें । इसके सेवन से एक प्रकार की लत लग जाती है, और आप इसी में जकड़ कर रह जाते हैं और इससे निकलना नामुमकिन सा लगता है ।

तंबाकू के उपभोग से जुड़ीं स्वास्थ्य समस्याओं और अन्य पैदा हुए खतरों पर जोर दिया जाता है । साथ ही तंबाकू के खपत को कम करने के लिए प्रभावी नीतियों को भी सरकार द्वारा बनाया जाता है । मानव जीवन प्रकृति का एक अनमोल उपहार है, हमें जीवन को महत्व देना चाहिए और इसे बेकार और अर्थहीन चीजों में बर्बाद नहीं करना चाहिए । तंबाकू आपको कुछ समय के लिए खुशी तो दे सकता है, लेकिन इसकी आदत आपको लंबे समय के लिए बीमार कर सकता है । आपके अच्छे और खुशहाल जीवन को बर्बाद कर सकता है ।

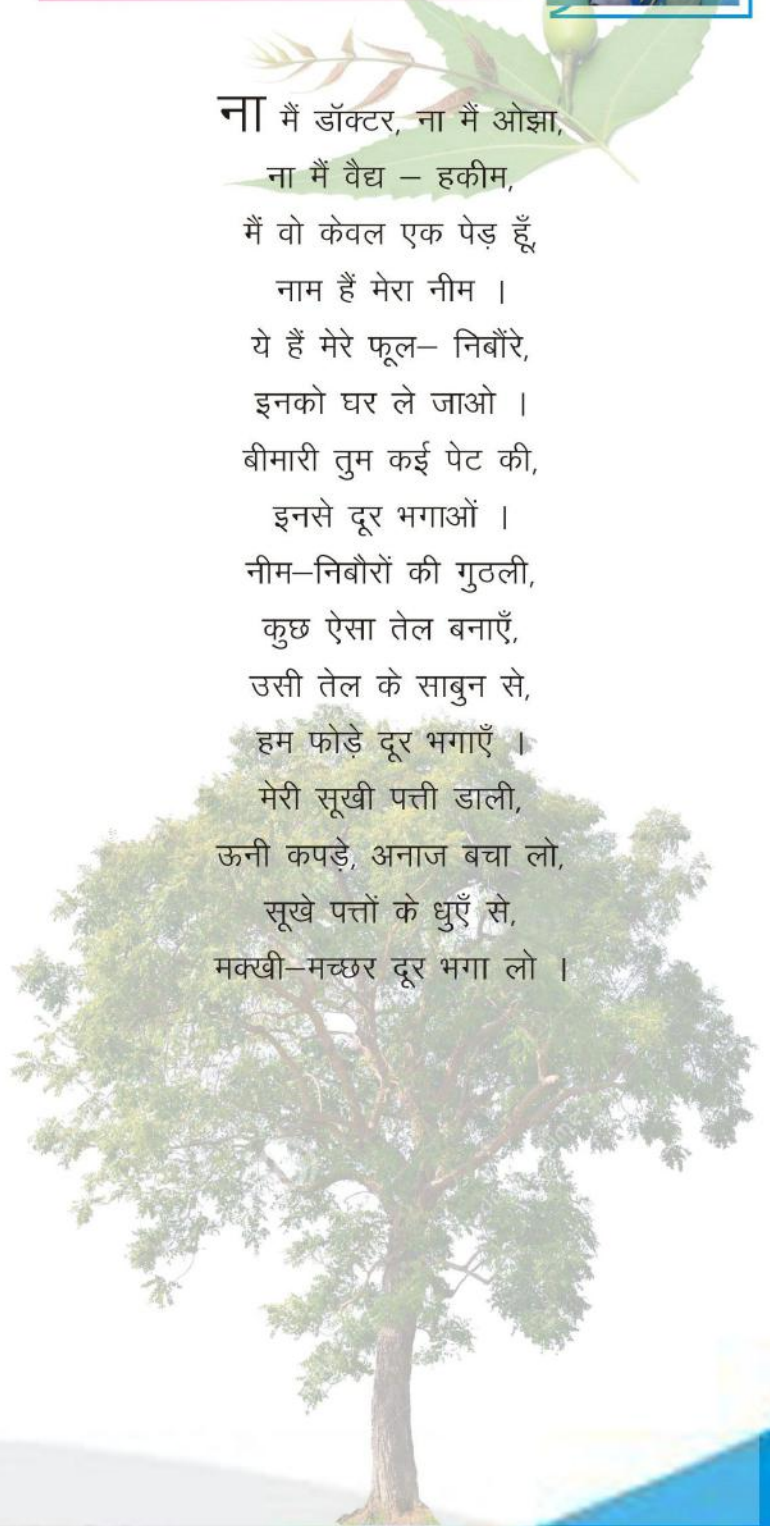
नीम

सुश्री प्रीति प्रज्ञा नायक

पुत्री – श्री प्रियव्रत नायक, वरि. लेखापरीक्षक



ना मैं डॉक्टर, ना मैं ओझा,
ना मैं वैद्य – हकीम,
मैं वो केवल एक पेड़ हूँ,
नाम हैं मेरा नीम ।
ये हैं मेरे फूल– निबौरे,
इनको घर ले जाओ ।
बीमारी तुम कई पेट की,
इनसे दूर भगाओ ।
नीम–निबौरों की गुठली,
कुछ ऐसा तेल बनाएँ,
उसी तेल के साबुन से,
हम फोड़े दूर भगाएँ ।
मेरी सूखी पत्ती डाली,
ऊनी कपड़े, अनाज बचा लो,
सूखे पत्तों के धुएँ से,
मक्खी–मच्छर दूर भगा लो ।



२०२०

भारत में लोकतन्त्र का भविष्य

श्री ऋतुध्वज
वरि. लेखापरीक्षक



प्रजातन्त्र का अर्थ 'प्रजातन्त्र' शब्द ग्रीक भाषा से अवतरित अंग्रेजी शब्द 'Democracy' का हिन्दी रूपान्तर है, जिसका अर्थ होता है – प्रजा अर्थात् जनता द्वारा परिचालित शासन व्यवस्था । वैसे तो प्रजातन्त्र की कई परिभाषाएँ अब तक दी गई हैं, किन्तु उनमें अब्राहम लिंकन द्वारा दी गई परिभाषा सर्वाधिक मान्य एवं प्रचलित है । उनके अनुसार, "प्रजातन्त्र जनता का , जनता के लिए , जनता द्वारा शासन है ।" इस तरह प्रजातन्त्र में जनता में ही प्रशासन की सम्पूर्ण शक्ति विद्यमान होती है । उसकी सहमति से ही शासन होता है एवं उसकी प्रगति ही शासन का एकमात्र लक्ष्य होता है । हालांकि सभ्यता की शुरुआत में शासन व्यवस्था के रूप में राजतन्त्र की ही प्रमुखता थी किन्तु इस शासन व्यवस्था की सबसे बड़ी खामी यह थी कि प्रायः इसमें आम जनता को अपनी बात रखने का अधिकार नहीं होता था ।

आज प्रजातन्त्र एक शक्तिशाली प्रशासनिक व्यवस्था के रूप में उभर चुका है और भारत विश्व के सबसे बड़े प्रजातान्त्रिक देश के रूप में जाना जाता है । यदि हम भारतीय इतिहास पर नजर डालें तो तीसरी शताब्दी में भारत के सोलह जनपदों में वैशाली एक ऐसा जनपद था जहाँ गणतान्त्रिक शासन व्यवस्था विद्यमान थी, किन्तु आधुनिक प्रजातन्त्र की उत्पत्ति का स्थल यूरोप को ही माना जा सकता है क्योंकि इसकी नीव मध्यकाल को बारहवीं एवं तेरहवीं शताब्दी के बीच विभिन्न यूरोपीय देशों में राजतन्त्र के विरोध के साथ पड़ी । यूरोप में पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार आन्दोलनों ने प्रजातन्त्रात्मक सिद्धान्तों के विकास में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इन आन्दोलनों ने व्यक्ति की धार्मिक स्वतन्त्रता पर बल दिया तथा राजा की शक्ति को सीमित करने के प्रयत्न किए ।

सामान्यतः प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था दो प्रकार की मानी जाती है – प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र एवं अप्रत्यक्ष प्रजातन्त्र । वह शासन व्यवस्था जिसमें देश के समस्त नागरिक प्रत्यक्ष रूप से राज्य कार्य में भाग लेते हैं, प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र कहा जाता है । अप्रत्यक्ष प्रजातन्त्र में जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि शासन चलाते हैं । व्यवस्था के दृष्टिकोण से प्रजातन्त्र के दो रूप होते हैं – संसदात्मक एवं अधिकात्मक संसदात्मक व्यवस्था में जनता एक निश्चित अवधि के लिए संसद सदस्यों का निर्वाचन करती है । संसद द्वारा मन्त्रिमण्डल का निर्माण होता है । मन्त्रिमण्डल संसद के प्रति एवं संसद सदस्य जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं । संसदात्मक प्रजातन्त्र में राष्ट्रपति यद्यपि सर्वोच्च पद पर आसीन होता है किन्तु वह नाममात्र का शासक होता है । भारत में शासन प्रणाली की संसदात्मक व्यवस्था है । अधिकात्मक प्रजातन्त्र प्रणाली में राष्ट्रपति सर्वाधिक शक्तिशाली होता है । अमेरिका जैसे देशों में ऐसी ही प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था है । सरकार के अंग प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था में सरकार के तीन अंग होते हैं – विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका । विधायिका का कार्य कानून का निर्माण करना, कार्यपालिका का कार्य उन कानूनों का सही ढंग से क्रियान्वयन करना एवं न्यायपालिका का कार्य कानून का उल्लंघन करने वाले लोगों को दण्डित करना है । इस प्रकार सरकार के तीनों अंग प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था को सशक्त बनाते हैं ।

प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था के अनेक लाभ हैं । प्रजातान्त्रिक शासन में राज्य की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्व दिया जाता है । राज्य व्यक्ति के विकास के लिए पूर्ण अवसर प्रदान करता है । जिस तरह व्यक्ति और समाज को अलग करके दोनों के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती । ठीक उसी प्रकार प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था में प्रजा और सरकार को अलग – अलग नहीं देखा जा सकता ।



प्रजातन्त्र के कई लाभ हैं, तो कई हानियाँ भी हैं । प्रजातन्त्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि जनता शिक्षित हो एवं अपना हित समझती हो । जनता के अशिक्षित होने की स्थिति में स्वार्थी लोग धर्म , जाति , भाषा , क्षेत्र इत्यादि के आधार पर लोगों को भ्रमित कर सत्ता में आ जाते हैं । कभी – कभी ऐसा भी देखने में आता है कि धनी एवं भ्रष्टाचारी लोग गरीब जनता को धन का प्रलोभन देकर या अपने प्रभाव से सत्ता पाने में कामयाब रहते हैं । प्रौद्योगिकी में विकास के बाद इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के आम चुनाव में शामिल करने से यद्यपि चुनाव में होने वाले भ्रष्टाचार में कमी हुई है, किन्तु यदि जनता समझदार न हो तो अभी भी भ्रष्ट उम्मीदवार को निर्वाचित होने से नहीं रोका जा सकता ।



प्रजातन्त्र के बारे में मुहम्मद इकबाल ने लिखा है "जम्हूरियत वह तर्ज – ए – हुकूमत है कि जिसमें बन्दों को गिना करते हैं, तौला नहीं करते ।" अर्थात् प्रजातन्त्र ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें बहुमत के आधार पर जन – प्रतिनिधियों का चुनाव किया जाता है न कि उम्मीदवारों की योग्यता के आधार पर । इस तरह यदि जनता शिक्षित एवं समझदार न हो तो इस बात की सम्भावना है

कि वह ऐसे आदमी को बहुमत दे, जो योग्य न हो । प्रजातन्त्र की एक और कमी यह है कि जनता स्वयं प्रत्यक्ष रूप से शासन नहीं करती, बल्कि शासन के लिए प्रतिनिधि चुनती है ।

चुने गए प्रतिनिधि के जनता की उम्मीदों पर खरा नहीं हो उतरने की स्थिति में, देश एवं समाज का कभी भला नहीं हो सकता । इसलिए राजनीतिशास्त्र के विद्वान् प्लेटो ने प्रजातन्त्र को मूर्खों का शासन कहा है । प्लेटो लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए "लोकतांत्रिक आदमी" शब्दका उपयोग करता है । लोकतांत्रिक आदमी कुलीन वर्ग का बेटा है । अपने पिता के विपरीत, लोकतांत्रिक आदमी अनावश्यक इच्छाओं से भरा पड़ा है । लोकतांत्रिक व्यक्ति उन सभी चीजों में बहुत रुचि लेता है जो वह अपने पैसे से खरीद सकता है । प्लेटो का मानना है कि लोकतांत्रिक व्यक्ति लोगों की मदद करने के बजाय अपने धन के लिए अधिक चिंतित है । वह जब चाहे जो चाहे कर लेता है । उनके जीवन का कोई क्रम या प्राथमिकता नहीं है । प्रजातन्त्र का एक और दोष यह है कि न्यायपालिका सरकार का मुख्य अंग होने के बावजूद समय पर न्याय नहीं कर पाती क्योंकि न्यायपालिका पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं होता ।

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि यदि जनता अशिक्षित हो या अधिक समझदार न हो तब प्रजातन्त्र की कमियाँ अधिक बढ़ सकती हैं, किन्तु यदि जनता शिक्षित एवं समझदार हो तो इसे सर्वोत्तम शासन व्यवस्था कहा जा सकता है क्योंकि इस प्रणाली में ही जनता को अपनी बात कहने का पूर्ण अधिकार होता है । निश्चय ही आज कहा जा सकता है कि भारतवर्ष में प्रजातन्त्र का भविष्य दीर्घकालिक एवं सुखद है ।

XXXXXXXXXX

वर्तमान में गाँधीवाद की सार्थकता

श्री राजेश कुमार झा
वरि. लेखापरीक्षक



महान भौतिकविद् अल्बर्ट आइंस्टीन ने सत्य एवं अहिंसा के पूजारी महात्मा गाँधी के बारे में ठीक ही कहे थे— “आने वाली पीढ़ियाँ, बहुत संभव है कि यह बहुत मुश्किल से विश्वास करेंगी कि इस तरह के किसी मांस और खून वाले ने कभी धरती पर चहलकदमी की होगी” ।

अल्बर्ट आइंस्टीन महात्मा गाँधी और उनके अहिंसा के सिद्धांत के बहुत बड़े प्रशंसक थे। वह महात्मा गाँधी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए नहीं थकते थे। अपने तमाम साक्षात्कारों और वक्तव्यों में वह महात्मा गाँधी की प्रशंसा करते हुए दिखते थे। गाँधी के 70वें जन्मदिन पर सन् 1939 में अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक वक्तव्य जारी किया था जिसका एक अंश प्रस्तुत है — “अपने लोगों का एक नेता किसी भी बाह्य ताकत के द्वारा असमर्थित, एक राजनीतिज्ञ जिसकी सफलता तकनीकी उपकरणों और कलाबाजी पर निर्भर नहीं है, बल्कि उसके व्यक्तित्व की विश्वसनीय क्षमता पर निर्भर है। एक विजयी योद्धा जिसने ताकत के इस्तेमाल से हमेशा नफरत की है। एक बुद्धिमान और विनम्र इंसान जो सुलझी हुई और अटल बारंबारता के साथ काम करता है जिसने अपनी सारी ऊर्जा को अपने लोगों के उत्थान में और उनकी सर्वस्व की भलाई के लिए समर्पित कर दिया है । एक इंसान जिसने यूरोप की क्रूरतापूर्ण निर्दयता का साधारण मानव की गरिमा से डटकर सामना किया है और इस तरह हमेशा उच्चता और उत्कृष्टता के साथ उभरा है।”

आज के वर्तमान युग में जहाँ लगभग सभी लोग किसी न किसी तरह के मानसिक तनाव से ग्रस्त हैं । महात्मा गाँधी के विचार, दर्शन और सन्देश बहुत ही यथार्थ और सार्थक हैं। उनकी सहजता एवं सरलता ही आधुनिक सभ्यता को सर्वनाश से बचा सकता है। स्थायी मान्यताएँ जैसे स्व से पूर्व सेवा, संचय

से पूर्व त्याग और दूसरों के लिए चिन्ता, बहुत तेजी से समाप्त होती जा रही है और उनका स्थान स्वार्थपरता, लालच, अवसरवाद, धोखा, चालाकी और झूठ के द्वारा लिया जा रहा है। इन सबने द्वन्द्वों और संघर्षों को जन्म दिया है और सहिष्णुता तथा मानव प्रेम के उच्च आदर्श कमजोर पड़ते जा रहे हैं। इस भयावह तस्वीर को पूर्ण करने के लिए शस्त्रीकरण के लिए अनंत होड़ लगी हुई है। युद्ध के विनाशकारी शस्त्र मानव जाति के अस्तित्व के लिए ही खतरा बने हुए है। बड़े पैमाने पर विनाश की गई और नई तकनीकियों का विकास किया जा रहा है। कानून की सभी प्रणालियों, करारों संधियों एवं गठबन्धनों को मानवीय मेल-जोल और शान्ति स्थापित करने में सफलता नहीं मिली है।

इस प्रकार के परिप्रेक्ष्य में गाँधीवाद ही एक आशा की किरण प्रस्तुत करता है। गाँधीजी के मूल्य एवं सिद्धांत, आदर्श और उपदेश मानवता को आंतरिक बाह्य अमर शान्ति की मंजिल तक पहुंचने के लिए दिशा प्रदान करते हैं। सत्य के साथ गाँधीजी के प्रयोगों ने उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था कि सत्य की सदैव विजय होती है और सही रास्ता सत्य का रास्ता ही है। आज मानवता की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। गाँधी जी सत्य को ईश्वर का पर्याय मानते थे। उनका ईश्वर में पूरा विश्वास था जिसका वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया कि ईश्वर एक अदृश्य शक्ति है जिसका अस्तित्व है ईश्वर में विश्वास और सत्य का अनुसरण मानवता को सर्वनाश से बचा सकती है।

ईश्वर और सत्य से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध गाँधीजी का अहिंसा में विश्वास है। वास्तव में अहिंसा गाँधी दर्शन का आधार स्तंभ है। अहिंसा का सत्य से बहुत गहरा संबंध है। हिंसा असत्य है क्योंकि यह जीवन की एकता की विनाशिनी है और हिंसा का रास्ता बड़े खतरों से भरा हुआ है। शांति दुनिया में तभी स्थापित की जा सकती है जब हम अहिंसा का अनुसरण करें। गाँधी जी अहिंसक योद्धा थे। वे स्वयं दुःख एवं बलिदान झेलकर विरोधी के विरुद्ध संघर्ष करते थे। उनका लक्ष्य विरोधी के हृदय परिवर्तन का होता था। उनके अहिंसक युद्ध में भय और कटुता के लिए



कोई स्थान न था बल्कि वह युद्धरत दिलों में सद्भावना और मित्रता पैदा करता था। गाँधीजी अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में ही नहीं, अपितु व्यक्तिगत जीवन में भी अहिंसा का अनुसरण करने के पक्षधर थे। अहिंसा, अहिंसा तभी है जब इसका पालन, मन, वचन और कर्म से किया जाय। जिसने इस सिद्धांत का थोड़ा बहुत भी पालन अपने निजी जीवन में कर लिया है। उसे पता लगेगा कि यह कितनी शक्ति का हथियार बंदूक की बेरल से निकली गोली से अधिका शक्तिशाली। अहिंसा आध्यात्मिकता की पोषक है, बिल्कुल उसी प्रकार जैसे आध्यात्मिकता सच्चे धर्म की पोषक है। वर्तमान में भी व्यक्तिगत जीवन, सार्वजनिक जीवन और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में इस शास्त्र की शक्ति से बड़ी-बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की जा सकती है। गाँधीजी का धर्म एवं नैतिकता में गहरा विश्वास था। धर्म से अर्थ आडंबर एवं धार्मिक पाखण्ड नहीं था। उन्होंने धर्म का प्रवेश राजनीति में किया एवं इस प्रकार राजनीति का आध्यात्मिकरण किया। गाँधीजी उन लोगों से बिल्कुल सहमत नहीं थे जो यह कहते थे कि धर्म का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। धर्मविहीन राजनीति मृत्युजाल है जो आत्मा का हनन करता है। वे उन लोगों की इस स्थिति की भर्त्सना करते थे। जो साध्य को साधन का औचित्य ठहराता है। यदि साधन अनैतिक है तो उसकी प्रवृत्ति साध्य को दूषित करने की है। साध्य और साधन में वही संबंध है जो कि बीज और पेड़ में हैं। जैसा साधन होगा, वैसा ही साध्य होगा। गाँधीजी जीवन की सादगी का उपदेश देते थे। वे गौतम बुद्ध के साथ एकमत थे कि इच्छाओं को बढ़ाने से दुख कम पैदा होता है। हमारा वास्तविक कल्याण इच्छाओं को कम करने में है। इच्छा की समाप्ति से दुख की समाप्ति होती है और इसलिए निर्वाण प्राप्त होता है। गाँधीजी ने रोटी श्रम का विचार प्रतिपादित किया जो कि उनकी सादगी की धारणा पर आधारित है। इस विचार के अनुसार मनुष्य को अपनी रोटी शारीरिक श्रम के द्वारा कमाना चाहिए। यह सिद्धांत सर्वत्र प्रासंगिक है और सदैव के लिए सार्थक है। क्या ही अच्छा होता कि लोग इसका पालन करते तो बहुत सारे दुखों, अस्वस्थता, निराशा और जीवन के

तनाव समाप्त हो जाते।

गाँधीजी आर्थिक और राजनीतिक दोनों प्रकार के विकेंद्रीकरण के पक्षधर थे। अहिंसा में उनके विश्वास के कारण केन्द्रीकरण में निहित हिंसा के विषय में उन्हें चेतना थी। गाँधीजी आत्मनिर्भर और स्वायत्त पंचायतों की स्थापना के पक्षधर थे। गाँवों की समस्याओं का समाधान गाँव वालों द्वारा ही होना चाहिए और इसके लिए संगठन वे स्वयं ही बनाएँ। उनका विश्वास था कि सही वातावरण दिया जाए तो व्यक्ति में स्वयं पर शासन करने की सामर्थ्य है। आर्थिक क्षेत्र में भी गाँधीजी केन्द्रीकृत उद्योग के विरुद्ध थे। उन्होंने कुटीर उद्योग-धंधों के सुधार एवं स्थापना पर काफी बल दिया। सामान्यतः गाँधीजी भारी उद्योग-धंधों के खिलाफ थे। अब जबकि भारी उद्योगों से निकलनेवाली गैसों ने पर्यावरण की क्षति की समस्या को जन्म दिया है, तब कुटीर एवं लघु उद्योगों की ओर वापसी ही पर्यावरण प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों से बचने के लिए मानवता के लिए एक आशा की किरण प्रदान करती है। इस संबंध में गाँधीजी का दृष्टिकोण अब भी कितना सार्थक है। गाँधीजी की अद्वितीय देन है कि उन्होंने पूँजीवाद और समाजवाद का समन्वय किया। उनके ट्रस्टीशिप के सिद्धांत का यह लक्ष्य है। गाँधीजी अमीरों से धन छीनकर गरीबों में बाँटने में विश्वास नहीं रखते थे। वे अमीरों के फालतू धन को अमीर द्वारा ही समाज के भले के लिए ट्रस्ट में रखना चाहते थे। गाँधीजी का यह विचार आजकल बहुत सार्थक है क्योंकि मार्क्स की तरह समाजवाद की स्थापना या पूँजीवाद को नष्ट करना संभव नहीं है। ट्रस्टीशिप के सिद्धांत द्वारा गाँधीजी ने समाजवाद और पूँजीवाद के बीच का एक रास्ता निकाला।

इस प्रकार हम पाते हैं कि गाँधीवाद आज बहुत सार्थक है। हमें यह तथ्य स्वीकार करने की जरूरत है कि गाँधीवाद का प्रचार एवं अभ्यास ही हमारी सभ्यता को उन बुराइयों एवं ऋणात्मक प्रवृत्तियों से मुक्त कर सकता है, जो कि मानवजाति को इस्पात की एड़ियों से कुचलने की संभावना रखते हैं।

अहंकार

श्री जितेन्द्र कुमार,
डी.ई.ओ.



मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति कहा जाता है। हमारे बीच प्रचलित आध्यात्मिक एवं पौराणिक मान्यताओं के अनुसार दुनिया में लगभग 84 लाख योनियाँ हैं और इनमें भी मानव योनि को सर्वोत्तम माना जाता है। संसार में किसी भी व्यक्ति को उसके गुणों के कारण ही सम्मान देते हैं तथा अच्छे कर्मों के कारण उसकी प्रशंसा करते हैं। जबकि दुर्गुण एवं बुरे कर्म से वशीभूत मानव को उपेक्षा एवं तिरस्कार का पात्र बनाते हैं। यद्यपि दुर्गुणों की एक लंबी सूची है वरन् एक दुर्गुण ऐसा है, जो बहुत अच्छे व्यक्ति को भी अच्छे पथ से विचलित कर देता है, जो उसके पतन का मार्ग प्रशस्त करता है और वह है— अहंकार।

जीवन प्रगति में मानव का अहंकार बहुत बड़ा बाधक है। इसके वशीभूत होकर चलने वाला मनुष्य पतन की ओर ही जाता है। अहंकार से भेद बुद्धि उत्पन्न होती है जो मनुष्य को मनुष्य से ही दूर नहीं कर देती, बल्कि परमात्मा से भी अलग कर देती है। परमात्मा से भिन्न होते ही मनुष्य में पाप प्रवृत्तियाँ प्रबल हो उठती हैं और उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर देती हैं। घमंड अर्थात् अहंकार से ग्रस्त व्यक्ति अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझता और वो खुद को ही सर्वश्रेष्ठ समझता है। घमंडी का सिर कभी ऊँचा हो नहीं सकता। घमंड व्यक्ति को कभी नहीं उभार पाया है। ऐसे व्यक्ति कभी भी जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते। कहा भी तो गया है कि वहीं पेड़ छाया दे पाते हैं, जो अपनी शाखाओं को फैलाते हुए झुकते हैं। पुरातन कथाओं से भी यही सीखने को मिलता है। सतयुग में भगवान श्री राम से युद्ध करने वाला रावण महान ज्ञानी होने के बावजूद घमंडी था। उसके घमंड के कारण पूरे कुल का नाश हो गया। वर्तमान युग में अनेक मनुष्य में घमंड भरे रहते हैं। ऐसे व्यक्ति यही समझते हैं कि जैसे वही इस ब्रह्मांड के निर्माता हैं

और वही इसे क्षतिग्रस्त कर सकते हैं। वे भूल जाते हैं कि संपूर्ण सृष्टि के रचयिता भगवान क्षण भर में सभी का घमंड चकनाचूर कर सकते हैं। इसलिए अभी भी संभलने का वक्त है। प्रेम से सभी का हृदय जीता जा सकता है, घमंड से नहीं। घमंड के इस चक्रव्यूह से स्वयं को बचाने के लिए चिंतन और मनन करना पड़ेगा। वरना वक्त रेत की तरह हाथ से निकल जायेगा और हम खाली हाथ ही रह जायेंगे।

अहंकार से मनुष्य की बुद्धि सार्थक निर्णय नहीं ले पाती है। इसके चलते वह अपने स्वार्थ हेतु दूसरों के नुकसान की बात ही सोचता रहता है। इससे मुक्ति पाने के लिए जीव को भक्ति के मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए। यह प्रवचन पं. रामप्रकाश शास्त्री ने दिए हैं। पं. शास्त्री, सोमवार को प्रेमपुरा गांव में चल रही श्रीमद् भागवत कथा में प्रवचन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पूंजी प्रधान व्यवस्था में जब पैसे की अहमियत बढ़ती है तो लोग अहंकार करने लगते हैं। बाहुबली को अपनी ताकत का अहंकार होता है। वह दूसरों को नुकसान पहुंचाने की फिराक में रहता है। दशानन रावण को भी अपनी ताकत का अहंकार हो गया था। रावण के अहंकार को तोड़ने के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम तथा कंस के अहंकार को खत्म करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने अवतार लिया था।

अहंकार अथवा घमंड को हम कोई अन्य नाम देना चाहे तो इसे बीमारी अथवा दीमक की उपमा दे सकते हैं। जिस तरह बीमारी के रोगाणु दिनोंदिन शरीर को क्षीण कर एक दिन समाप्त कर देते हैं, अहंकार भी उसी अनुरूप व्यक्ति को ऐसे नशे में मदहोश कर देता है वह व्यक्ति को न केवल सच्चाई से परे एक कल्पना लोक में ले जाता है बल्कि जीवन के लिए असमायोजन करने वाली विकट स्थितियों को भी जन्म दे देता है। जीवन में दुःख का पर्याय अहंकार ही है। व्यक्ति अपने अहम भाव के कारण सभी से स्वयं को श्रेष्ठ तथा हर क्षेत्र में ज्ञान, शक्ति से सम्पन्न मानने लगता है। वह इस नशे में इस हद तक डूबा रहता है कि दूसरों के ज्ञान, अनुभव, सलाह का उपयोग करने की कभी जरूरत ही नहीं समझता है। संसार में अनगिनत जीव हैं



उनमें से सबसे कमजोर जीव में भी एक जबर्दस्त खूबी होती है वो है अनुकरण जिसके सहारे वह अपनी क्षमता में वृद्धि करता जाता है। मगर अहंकारी इंसान कभी किसी के अनुकरण को स्वीकार नहीं करता है। अहंकारी व्यक्ति न तो अपने अहंकार को पहचान पाता है और न ही अपनी कमी स्वीकारता है। इस प्रकार अहंकार से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

जहाँ अहंकार का वास होता है वहाँ नम्रता, बुद्धि, विवेक, आदर इत्यादि कोई गुण विद्यमान नहीं होगा। घमंड जिस इंसान पर हावी होता है वह सबसे पहला काम भी यही करता है कि अन्य गुणों का प्रवेश न हो। व्यर्थ के अहं भाव के कारण उसकी नजर में हमेशा सब लोग नीचे एवं निम्न स्तर के होते हैं। वह सदैव दूसरों की राह में बाधाएं उत्पन्न कर प्रसन्नता पाता है तथा औरों को गिराकर अपनी राहें बनाता है। जैसे जैसे अहंकारी व्यक्ति का ओहदा बढ़ता जाता है उसी अनुरूप उसका दम्भ भी वृद्धि करने लगता है। सत्ता, धन आदि के नशे में इस कद्र मशगूल रहता है कि वह कभी कल्पना नहीं कर पाता है कि एक दिन उसका भी पतन होगा, जीवन में कठिनाईयाँ आएंगी तथा उस समय उसके साथ खड़े होने वाला कोई नहीं होगा। एक अभागे इंसान स्वरूप उन्हें एकांकी रहकर कष्टों के बीच जीवन यापन करते हुए अन्तः पतन को प्राप्त होना होगा। कितना भी अच्छे व्यक्तित्व वाला इंसान हो यदि वह अहंकारी है तो उसके समस्त गुण उस तरह धुंधले हो जाते हैं जिस तरह धधकते अंगारों पर जमी राख की परत अग्नि को धुंधला कर जाती हैं। यदि हम इतिहास पर दृष्टि डालें, तो संसार में अनेक उदाहरण मिल जाएंगे जिनमें अहंकार के कारण बुद्धि भ्रष्ट हो जाने से न केवल व्यक्ति बल्कि बड़े-बड़े साम्राज्य भी नष्ट हो गए। हिरण्यकश्यप से लेकर रावण, बाली, कंस और कौरव तथा विश्व के अनेक राजा-महाराजा, तानाशाह तथा नेताओं तक विभिन्न व्यक्ति अहंकार के वशीभूत होकर काल के गर्त में समा गए और आज भी उनका नाम कोई सम्मान से नहीं लेता।

इसी प्रकार हमें अपने परिवार एवं समाज में भी अनेक अहंकारी देखने को मिल जाएंगे, जिनकी दृष्टि में उनके आगे

माता-पिता, भाई-बहन या कोई अन्य संबंध मायने नहीं रखते। मानवता या नैतिकता उनके शब्दकोश में नहीं होती। अहंकार के मद में चूर मनुष्य कभी शारीरिक तो कभी मानसिक, कभी बौद्धिक तो कभी सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक आधार पर स्वयं को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानने एवं मनवाने में लगे रहते हैं।

अहंकार युक्त इंसान को मानव जाति का सबसे तुच्छ प्राणी माना जाता है। वह अपने अहम भाव को बनाए रखने के लिए किसी पाप को करने से भी नहीं हिचकता है। व्यक्ति में स्व प्रशंसा से अहं भाव का जन्म होता है तथा स्वयं को सबसे सर्वोच्च मान लेने की स्थिति में यह अपने उत्कृष्ट रूप में दिखता है। इन लोगों में "मैं ही श्रेष्ठ हूँ" का भाव जन्म लेता है तो दूसरों के अधिकारों की परवाह न करते हुए अतिक्रमण करना समेत कई तरह के मानसिक विकार भी अहंकार के कारण ही पनपते हैं। क्षमा, दया, करुणा, प्रेम, धैर्य, नम्रता, सादगी ये कुछ ऐसे गुण हैं जो प्रत्येक मानव में आंशिक रूप से हो यह अपेक्षा की जाती है मगर जहाँ अहंकार का घर होता है वहाँ इन समस्त मानवीय मूल्यों के लिए कोई जगह नहीं बसती है। वह व्यक्ति इन अमोघ रुपी औषधि से जीवन भर अपरिचित ही रहता है जिसके कारण उसके अहं का स्वरूप दिन ब दिन उसे जकड़ता चला जाता है।

यदि एक विवेकशील व्यक्ति चाहे तो अपने अहंकार को मिटा सकता है उस पर नियंत्रण पा सकता है। इससे पूर्व उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि वह अहं में रहता है। जब तक गलती स्वीकार नहीं की जाएं उसमें सुधार की गुंजाइश न के बराबर होती है। अतः खुले हृदय से अपने अहं भाव को स्वीकार करिये तथा भविष्य में उसके दोहराने से बचने का प्रयास करें तो निश्चय ही हम अहंकार रुपी रावण से बच सकते हैं। हिन्दू धर्म ग्रंथों में कहा गया है – क्षमा परमो धर्मः। अतः हमें उस इंसान से क्षमा मांग लेनी चाहिए जिसको हमारे अहं भाव के कारण पीड़ा पहुंची हो। विनम्रता व्यक्तित्व का गहना होती है। इसकी शुरुआत अहंकार के अंत से ही होती है। जीवन में शान्ति और आनन्द के अनुभव तभी पाए जा सकते हैं जब हम विनम्र हो। हमें विनम्रता के आभूषण का वरण कर अपनी आंतरिक असीम शक्ति



को जागृत करना होगा यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो निश्चय ही समस्त तरह के मानसिक मनोविकारों से भी स्वयं को बचा सकते हैं तथा अपने खुशहाल जीवन की नींव रख सकते हैं।

“आज नहीं तो कल जरूर टूटेगा,
गुरुर किसका रहा है, जो नहीं टूटेगा”

~~~~~

## दशहरे की उषाकाल

सुश्री प्रतिभा कुमारी  
आशुलिपिक



छा जाता हल्का धुँआं-धुँआं सा  
हल्की ठंड पड़ती और मन में है अभिलाषा,  
फूल तोड़ते, और तोड़ते कलियों के गुच्छे,  
झुक जाती डालियाँ, गिरते ढेर पत्तें।  
फूलों पर लगाते सब ऐसे छलांग,  
मानों इनका पड़ने वाला है अकाल  
ऐसा हैं दशहरे की उषाकाल,  
निकल पड़ती बसहों की टोली,  
गले में इनके सतरंगी मोतियों की मौली।  
मधुर-मधुर तानों में बजती कनेर सी घंटी,  
मानो कोई पथिक लिया हो भारी गहनों की माटी।  
जल्दी पहुँचने को हैं वो बेहाल  
ऐसी है दशहरे की उषाकाल।  
चारों दिशाओं में गूँज उठी आरती की धुन  
कहीं कोई पाठ करता कहीं पर करता जाप,  
कहीं घंटा बजाकर भोग लगाता भक्त,  
देखो पुजारियों के मन में है कितने गुन  
चल पड़े मंदिर को शेष पुजारी

हाथों में लिए झालर से सजी थाल  
ऐसी है दशहरे की उषाकाल।  
नदियों में खिला नहीं अभी कमलगट्टा,  
मानों जल के ऊपर खड़ा बाती बुझा सा  
नदी गहरी हो या ठंडा हो पानी,  
फिर भी मन में है कमल लाने की अभिलाषा,  
कहीं पर है अनेक भोजपत्तें,  
कहीं पर जुड़े ढेर शैवालों के पत्ते।  
ऐसा लगे मानो किसी ने बिछा दिया हरी मखमली पाल  
ऐसी है दशहरे की उषाकाल।

~~~~~

छात्र संघर्ष

श्री आलोक कुमार झा
डी. ई. ओ.



राकेश एक छोटे से कस्बे चैनपुर ग्राम से संबंध रखता था। वह बारहवीं की परीक्षा के उपरांत अपने मन में एक नया लक्ष्य लेकर सामान्य प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने के लिए पटना जाने की तैयारी करता है। उसका पिता एक किसान था। वह और उसका पूरा परिवार गांव में ही रहता था तथा पूर्णतः कृषि पर ही निर्भर था। राकेश के पिता किताबी शिक्षित तो नहीं थे परंतु वह व्यवहारिक शिक्षित जरूर थे। उसने अपने बेटे को बुलाया और पूछा कि बारहवीं के बाद आगे क्या लक्ष्य हैं? उसने अपने पिता को बताया कि मैं आगे की पढ़ाई के लिए पटना जाना चाहता हूँ और सामान्य प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करना चाहता हूँ। उसके पिता ने पूछा कि सामान्य प्रतियोगी परीक्षा क्या होती है? तब राकेश ने बताया कि मैं बैंक, रेलवे और एस.एस.सी. की तैयारी करना चाहता हूँ। उसके पिता ने पूछा – प्रत्येक महीना



कितना खर्चा लगेगा ? राकेश ने बताया कि प्रत्येक महीना लगभग रु. 2000 से 2500 लगेगा । राकेश का पड़ोसी मोहन पटना में रहकर सामान्य प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा था । राकेश ने मोहन से तैयारी और पटना में रहने से संबंधित जानकारी मांगी । मोहन ने कहा कि मैं अभी अकेला रह रहा हूँ, तुम मेरे साथ रहना चाहो तो रह सकते हो । राकेश राजी हो गया । राम बड़े उत्साह से अपने स्टेशन से पटना जाने के लिए आता है और साथ में उसके पिता भी आते हैं । ट्रेन चलने से पहले राकेश के पिता ने उसे सलाह दी कि बेटा अपने पूरे परिवार की जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है तुम इस परिवार की रीढ़ की हड्डी हो । इसलिए तुम अपने मन में अपना लक्ष्य हमेशा स्पष्ट रखना और इधर-उधर की बातों से बच के रहना । राकेश पटना पहुँचता है और स्टेशन से निकलते ही महावीर मंदिर का दर्शन होता है । वह मंदिर जाकर दर्शन करता है और मोहन जिस लॉज में रहता है वह वहाँ पहुँचता है और अपना सारा सामान रखकर और खाना खा कर सो जाता है । वह पटना के लॉज की जिन्दगी से पूरी तरह अनभिज्ञ था परंतु उसने अपने मन में अपना लक्ष्य स्पष्ट कर रखा था । वह धीरे-धीरे लॉज की जिन्दगी से परिचित होकर खूब मन लगाकर तैयारी करने में जुट गया । सप्ताह में एक बार गाँधी मैदान जाकर वह कम कीमत पर उपलब्ध किताबें खरीद कर लाता था । उसके पिता प्रत्येक महीना नियत समय पर रुपये भेज देते थे । राकेश ने धीरे-धीरे पटना के विद्यार्थी जीवन में समय प्रबंधन एवं धन प्रबंधन बहुत अच्छी तरह से सीख लिया था ।



धीरे-धीरे लगभग 02 वर्ष बीत गए । राकेश बहुत सारी परीक्षाओं में शामिल हुआ लेकिन सफल नहीं हो सका । एक दिन राकेश ने तैयारी छोड़कर गाँव जाने का मन बना लिया और सोचा गाँव जाकर पिताजी के काम में हाथ बटाऊँगा, परंतु पिताजी को अपनी मन की बात बताई तो पिताजी ने राकेश को एक बहुत अच्छी सीख दी । उन्होंने कहा कि अपने क्षेत्र में कोसी नदी में हर वर्ष बाढ़ आती है फिर क्या हम किसान अपनी खेती करना छोड़ देते हैं ? तुम कोशिश करो जरूर सफल होंगे । पिताजी की बात सुनकर उसकी आँखें भर आई । वह दोगुने उत्साह से मेहनत करने लगा ।



एक दिन रेलवे स्टेशन मास्टर का रिजल्ट आया और परिणाम देखकर खुशी से उसकी आँखें भर आई । उसका चयन हो गया था । उसने अपनी सफलता के बारे में अपने माता-पिता को फोन से बताया । उसके पिता बहुत खुश हुए । यही एक कुशल पिता और एक किसान के संघर्ष की कहानी है । इस तरह बहुत सारे छात्र अपने लक्ष्य को प्राप्त करने पटना आते हैं, इनमें से कुछ तो सफल होते हैं और कुछ गलत संगति में पड़कर या असफलता देखकर अपने लक्ष्य से दूर हो जाते हैं । प्रत्येक छात्र को राकेश की तरह स्पष्ट लक्ष्य रखना चाहिए और असफलता से घबराना नहीं चाहिए ।



नसीब है कि जिंदगी नसीब है

श्री गिरराज शरण अग्रवाल
वरिष्ठ अनुवादक



हमेशा करते रहते शिकायत
ये नहीं मिला वो नहीं मिला
नौकरी नहीं, व्यापार नहीं
मकान नहीं, कार नहीं, ट्रिप नहीं
नौकरी है तो पेंशन नहीं
व्यापार है तो मुनाफा नहीं
मकान छोटा है, कार पुरानी है ट्रिप देशी है
रिश्ते माकूल नहीं
यूँ ही रो रो कर दिन-रात बिताते हैं।
शिकायतों का अम्बार लगाते हैं
पर ये क्यूँ भूल जाते हैं
कि कितने लड़ रहे हैं अस्पतालों में चंद और साँसों के लिए
और एक हम हैं कि साँसों को अपेक्षाओं और ख्वाहिशों से
दबाये चले जा रहे हैं
एक बात समझ लो यारों
यहाँ कुछ भी परफेक्ट नहीं
लेकिन नसीब है कि जिंदगी नसीब है
छोड़ो शिकायतों को, छोड़ो ख्वाहिशों को
खुश हो लो, झूम लो, नाच लो, गा लो यारों
क्योंकि नसीब है कि जिंदगी नसीब है ।



प्रकृति

सुश्री प्रीति चंदा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



जब मनुष्य प्रकृति को अपनी जागीर समझ लेता है और
इसका अपमान करता है । तब प्रकृति अपना रौद्र रूप दिखाती है
और क्रंदन करती हुई बोल उठती है ।

हां जानती हूँ तुम पसीज रहे,
मगर थोड़ा और अभी तपना होगा,
जिस आग में झुलसाया तुमने मुझको,
तुमको भी उसमें झुलसना होगा ।
गुरुर जो इतना तेरा ऊँचा हो रहा,
उनको तो चकनाचूर होना होगा,
जो भ्रम है कि तू ही ब्रह्मांड है,
उसको तो दूर होना होगा ।



प्रकृति हूँ इंसान नहीं,
खत्म करो अपमान यहीं,
जो दिया तुमने मुझको,
उससे तुमको मिलाने आयी हूँ ।
मुझसे हो तुम, तुमसे नहीं मैं,
तुम्हें यह याद दिलाने आयी हूँ ।



लॉकडाउन

सुश्री ज्योति
अनूजा – सुश्री प्रीति चंदा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



आज बड़ा दिल मचल रहा,
बस फुर्र से उड़ जाने को ।
घर पर पड़ी-पड़ी लग रही फफूंदी तन पर,
लगता बीते कई जमाने हो ।
मैं थी तीली माचिस की,
गुल से गुलकंद हुई ।
पहले मम्मी कहती खाओ-खाओ,
अब तो नज़रबंद हुई ।
कभी सोफे पर कभी झूले पर,
इचक बिचक इठलाती हूँ ।
टीवी, मोबाइल देख-देख कर,
सबके सपनों को मिट्टी में मिलाती हूँ ।
लात-घूंसे पड़ रहे रोज,
मम्मी कहती 'थोड़ा शर्म करो'
लो झाड़ू और पोंछा भी,
कुछ तो अच्छे कर्म करो ।
खिड़की से देखा बाहर तो,
पुलिस भी रोता दिख रहा ।
मुझको क्या डर घर के भीतर,
पर उनका कुछ खोता दिख रहा ।
फिर चुपचाप मैं दुबक गई,
आस लिए कल की – हम सब सही पाएंगे ।
रही सलामत दुनियां तो,
मिलकर कई उड़ान लगाएंगें ।

~~~~~

## कवच

श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव  
पत्नी – लोकेश चंद्र लाल  
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



व्यक्ति के वर्षभर के मेहनत का परिणाम उसे सफल बनाती है । उसके कर्म व सूझबूझ ही उसके आगे का मार्ग प्रशस्त करती है । कई बार व्यक्ति द्वारा जल्दबाजी में उठाया गया एक कदम उसके सभी रास्ते बंद कर देता है ।

सुमित आज बहुत जल्दी में है । बी. ए. अंतिम वर्ष की अंतिम परीक्षा है । सारे प्रश्नों को आज सुमित पढ़ लेना चाहता है क्योंकि वो कोई जोखिम नहीं उठाना चाहता है । उसकी नजर में समझदार वही है जो हर वक्त संभलकर समझदारी से कार्य करें । उसकी यह सोच उसके दोस्तों के लिए एक मजाक का विषय था । आजकल के युवाओं के लिए 'रिस्क है तो इश्क है' बड़े ट्रेंड में है । अपनेआप को एक-दूसरे से बेहतर दिखाने की कोशिश में बड़े से बड़ा जोखिम उठाने में भी नहीं हिचकिचाते थे फिर चाहे परिणाम कुछ भी हो । कई लोगों को निषेधात्मक व गैरकानूनी कार्य करने में ही गर्व महसूस होता है । वे अपने द्वारा किए गए कार्य को कूल समझते हैं और अपनेआप को अंधाधून दौड़ में शामिल करते हैं । सुमित इन सब से दूर एक शांत और एक समझदार लड़का था । वैसे तो सुमित ने पूरी वर्ष कड़ी मेहनत की थी पर अंतिम समय में भी सुमित कोई कसर नहीं छोड़ना था । पढ़ तो सुमित रहा था पर बेचैन उसकी माँ हो रही थी । कैसे प्रश्न आएंगे ? सुमित कैसा उत्तर देगा ? कैसा परिणाम आएगा ? इन सब प्रश्नों ने सुमित को परेशान कर रखा था । सुमित की माँ हमेशा से ही उसके लिए सुरक्षा कवच बनकर रही थी । कहीं भी कोई समस्या हो उसकी माँ हमेशा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसके साथ रहती थी और हर कदम पर उसे हिम्मत प्रदान करती थी । सुमित की माँ उसे बचपन से ही माँ और पिता का स्नेह बराबर देती आई है । वह हिम्मत और समझदारी की



प्रतिमूर्ति बनकर सुमित के समक्ष सदैव उपस्थित रहती थी । धैर्य और समझ की पाठ उसकी माँ ने उसे बचपन से दिया है । कहते हैं जिस जीव रूपी बीज को माँ-बाप बोते हैं और जिस तरह की मिट्टी में बच्चा पलता-बढ़ता है, समय आने पर वह उसी भाँति का पेड़ बनता है और फल धारण करता है । सुमित जो भी है उसका श्रेय उसके माता-पिता को ही जाता है ।



सुमित समय हो गया है । जल्दी करो । दही-चीनी खाकर ही निकलना । ठंडे दिमाग से प्रश्नों को पढ़ना फिर उत्तर लिखना । समय और समझदारी का तालमेल बनाकर रखना । यह दोनों बहुत बड़े औजार हैं सफलता के लिए । माँ के इन शब्दों ने सुमित को नवीन ऊर्जा से भर दिया । माता-पिता का आशीर्वाद बच्चों को सदैव ही विजयी बनाता है । सुमित के घर से निकलते ही उसकी माँ रोज के कार्य में लग गई । सुमित के पिता के जाने के बाद वह टूट-सी गई थी परंतु उसने ही घर की बागडोर को संभाला था । नवीन गृहस्थी में ऐसा सैलाब भी आएगा इससे वह अनभिज्ञ थी । शादी के दो वर्षों के बाद ही ऐसी अप्रिय घटना घटी जो हंसते-खेलते परिवार को हमेशा के लिए रुलाकर चला गया । कुत्ते के बच्चे को बचाते-बचाते वह स्वयं काल के ग्रास बन गए । कुत्ते को तो नई जिंदगी मिल गई पर अपने परिवार को हमेशा के लिए वह छोड़ चला । जब भी सुमित की माँ उस घटना के बारे में सोचती है उसका दिल दहल उठता है । आज भी फोन की घंटी सुमित की माँ को डरा देती है । बार-बार सुमित की माँ की नजर घड़ी की सूइयों पर जा रही है क्योंकि सुमित के घर आने का वक्त हो गया है पर अभी तक

सुमित के न आने से उसे बेचौनी सी हो रही है । अचानक बजी फोन की घंटी ने सुमित की माँ के हृदय में तूफान ला दिया क्योंकि फोन पुलिस स्टेशन से था । उन्होंने बताया कि सुमित की दुर्घटना हो गई है और वह सिटी अस्पताल में है ।

आज इस समाचार ने सुमित की माँ को वहीं खड़ा कर दिया है जहाँ वह बीस साल पहले खड़ी थी । वर्षों से उसकी माँ ने अपने आप को संभाल रखा था पर आज वह बिखर गई है क्योंकि एक पत्नी इस तरह की दुर्घटना में मर गई थी पर आज वह एक माँ को मरता हुआ नहीं देख सकती थी । बार-बार सुमित की माँ भगवान को याद कर रही है और मन ही मन उनसे लड़ भी रही है ।



वो दिन सुमित की माँ दोबारा नहीं देखना चाहती है जब कुत्ते के बच्चे को बचाते - बचाते..... आज तक यह बात सुमित की माँ ने खुद से भी छिपा रखी थी । वो अच्छी तरह से जानती थी कि सुमित के पिता की मौत की वजह केवल कुत्ते के बच्चे को बचाना नहीं था वरन् उसे बचाते समय हुए असंतुलन और उनका सिर एक बड़े पत्थर से टकराना था । पत्थर से टकराने पर भी वह बच सकते थे मगर एक छोटी-सी चूक ने परिवार की हंसती-खेलती जिंदगी को तबाह कर दिया । उस दिन सुमित के पिता बहुत जल्दी में थे और इसी जल्दबाजी में वे हेलमेट पहनना भूल गए । सुमित की माँ हेलमेट लेकर तुरंत दरवाजे पर पहुँची पर उनका वो अंतिम कथन- 'अरे! एक दिन हेलमेट नहीं लगाने से कुछ नहीं होगा ।' यह वाक्य बार-बार सुमित की माँ के कान में बज रही थी । उस दुर्घटना से सुमित के पिता



चल बसे । जाते-जाते सुमित की माँ को सीख दे गए कि जल्दबाजी में उठाया गया कदम अक्सर हमें मुश्किल में डाल देता है । किसी भी स्थिति में या परिस्थिति में हमें धैर्य नहीं खोना चाहिए । सुमित के पिता की जल्दबाजी में पहुँचने के विचार ने उन्हें जल्द ही दुनिया से विदा कर दिया । लेकिन क्या सुमित ने भी आज वही गलती की है ।

सुमित की माँ बार-बार अपने आप को कोस रही है कि सारी गलती उसी की है । सुमित तो बच्चा है । उन्हें ही समय का ध्यान रखना चाहिए था । इसने वर्षों से बाइक से जाने के समय बिना हेलमेट दिए सुमित की माँ उसे विदा नहीं करती थी तो आज कैसे भूल गई । क्या सुमित के माँ की वजह से ही सुमित आज अस्पताल में है । डबडबाई आँखों से सुमित की माँ अस्पताल की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी । तभी उन्होंने देखा सुमित हंसता हुआ माँ के पास आ रहा है । सुमित को सही सलामत देखकर डबडबाई आँखें विरल अश्रुधारा प्रवाहित करने लगीं । माँ ने उसे चुमते हुए गले से लगा लिया । सुमित ने माँ को संभालते हुए कहा कि तुम चिंतित न हो । सिर्फ हल्की-फुल्की खरोंच आई है जो फर्स्ट-एड से ठीक भी है । उसके यह बताने के बाद माँ ने जी भर कर सुमित को निहारा और राहत की सांस ली । फिर सुमित ने बताया कि एक गाड़ी उसे ओवरटेक करने की कोशिश कर रही थी जिससे दुर्घटना हुई पर हेलमेट की वजह से आज सुमित सही-सलामत है । सुमित ने कहा कि वह आज आपके ही कारण आपके नजरों के सामने वह खड़ा है । जिस धैर्य और समझदारी का पाठ उन्होंने सुमित को दिया वही उसके काम आई । देरी होने के बावजूद भी वह हेलमेट लेना नहीं भूला और न ही दूसरे वाहन के परेशान करने के बावजूद भी उसने अपना धैर्य खोया । माँ और बेटा दोनों खुशी-खुशी घर की ओर चल पड़े ।

माँ के हृदय में प्रसन्नता और दुख दोनों के भाव सामंजस्य बिठा रहे थे । जहाँ एक ओर हेलमेट न पहनने के कारण उसके पति की जान गई वहीं हेलमेट पहनने से उसका बेटा आज उसके सामने खड़ा है । मन ही मन उसकी माँ ने यह

प्रण लिया कि वह लोगों में हेलमेट के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास करेगी क्योंकि अगर एक छोटा-सा प्रयास उसके बेटे की जिंदगी बचा सकता है तो समाज में कितने भटके, लापरवाह लोगों को भी सही राह दिखा सकती है । समाज को सही दिशा देने का कर्तव्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति का है ।

~~~~~

वन सम्पदा

श्री लोकेश कुमार
डी. ई. ओ.



हमारी पृथ्वी ब्रह्मांड का एक अनोखा हिस्सा है जो भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राकृतिक सम्दाओं से भरे पड़े हैं, उनमें एक है वन सम्पदा, जिसका अर्थ है विभिन्न प्रकार के वृक्ष, पौधे, लताएँ आदि । इनमें से कुछ इमारती वृक्ष, कुछ औषधीय वृक्ष, कुछ फलदार वृक्ष तथा जिनमें फसली पौधे भी शामिल हैं । कहा जाता है एक वृक्ष सौ पुत्र समान यानि वृक्ष हमें कई तरह से लाभ प्रदान करते हैं । एक वृक्ष से हमें ताजी हवा, इमारती लकड़ी, मीठे फल, फूल, छाया इत्यादि प्राप्त होते हैं, आज के समय में इमारती लकड़ी की बढ़ती माँग ने वृक्षों व जंगलों की कटाई को बढ़ावा दिया है जिसके फलस्वरूप पर्यावरणीय असंतुलन की स्थिति पैदा हो गई है । जैसे वायुमंडल में कार्बन-डाइ-आक्साइड गैसों की अधिकता जिसे वृक्ष व जंगल कम करते हैं व वायु का शुद्धीकरण करते हैं । मनुष्य अपने जीविकोपार्जन करने हेतु वृक्षारोपण करते हैं जिसे बागवानी कृषि कहते हैं ।





हमें इस प्रकार की कृषि पर बल देना चाहिए जिनमें फलदार वृक्ष जैसे आम, कटहल, पपीता जैसे वृक्ष आर्थिक रूप से काफी लाभप्रद हों । इसके साथ ही साथ बरगद, पीपल, तुलसी, अशोक, नीम के वृक्षारोपण पर विशेष बल देना चाहिए जो औषधीय होने के साथ-साथ पर्यावरणीय दृष्टिकोण से काफी लाभप्रद हैं । प्राचीन काल में भी भारतीय वैद्य विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधों का प्रयोग कर विभिन्न प्रकार के रोगों के उपचार हेतु उनका प्रयोग करते थे ।

ऐतिहासिक काल में रामायण में महाबली हनुमान जी द्वारा कैलाश पर्वत से संजीवनी बुटी लाकर श्री लक्ष्मण को दिया गया था और वो चंगे हो गये थे । इससे ज्ञात होता है कि भारतीय उपमहाद्वीप में नाना प्रकार के पौधों भरे पड़े हैं जो स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से काफी लाभप्रद हैं जिनके संरक्षण व विकास पर विशेष बल देना चाहिए । भारत के राजस्थान राज्य में वनों के विकास के कारण वर्षा की स्थिति सामान्य हुई है वहीं मध्य प्रदेश में वन क्षेत्रों की अधिकता के कारण जैव संरक्षण को बढ़ावा दिया गया है जिसके कारण उसे बाघ राज्य भी कहा जाता है ।

केरल को मसालों का बगीचा कहा है । उड़ीसा राज्य के दक्षिण के जिले व मयुरभंज जिले में जैव संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है जो वन संरक्षण नीति का एक भाग है वहीं गहीरमाथा तथा नन्दनकानन क्षेत्र वनों के कारण जैव संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है। वृक्षारोपण को बढ़ावा देने हेतु स्थानीय व राज्य-स्तरीय योजनाएँ भी संचालित की जाती है, जहाँ नर्सरियों के द्वारा पौधे वितरित किए जाते हैं जिसे आमजन अपने परतीभूमि या व्यक्तिगत बाड़ लगाकर वृक्षारोपण करते हैं ।

सरकारी योजनाओं के द्वारा सड़कों के किनारे तथा सरकारी भूमि पर वृक्षारोपण करते हैं जो कई प्रकार से मनुष्यों के लिए लाभप्रद हैं । सरकारी योजनाओं के द्वारा सड़कों के किनारे तथा सार्वजनिक स्थलों के आस-पास वृक्षारोपण किया जाता है । जिसकी देखरेख वनविभाग करती है, देश में बहुत से ऐसे वन क्षेत्र हैं, जिसे संरक्षित घोषित किया गया है ताकि वनों की अवैध

कटाई पर रोक लगाई जा सके । वृक्षारोपण से बाढ़ के कारण, मिट्टी के कटाव यानि अपरदन को रोकने में भी सहायता मिलती है, भारत के तटवर्ती इलाकों तथा बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में तटबंध का निर्माण करके उनपर वृक्षारोपण किया जाता है । इस तरह से वृक्षारोपण को बढ़ावा मिलता ही है साथ ही वनों के विकास में सहायता मिलती है । वनों के विकास से वन्य जीवों की दुर्लभ प्रजातियाँ भी अपना अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम होती है ।



वनों को कई वर्गों में विभाजित किया गया है जैसे—सदाबहार वन, उष्णकटीबंधीय वन, समशीतोष्ण वन, मैग्रोव वन भारत के पश्चिम बंगाल में स्थित सुन्दर वन का डेल्टाई क्षेत्रों में पाई जाती है, शंकुधारी वन हिमालयी क्षेत्रों में पाई जाती है, पर्णपाती वन, विषुवतीय वन अफ्रीका महादेश के कांगो बेसीन में तथा अमेजन वन दक्षिण अमेरिका के ब्राजील बेसीन में विश्वप्रसिद्ध है ये वन विभिन्न प्रकार के वनस्तपतियों से भरे पड़े हैं जहाँ विभिन्न प्रकार के जीवधारियों का आश्रयस्थली है । वनों के विनाश का सर्वाधिक कारण इमारती लकड़ी तथा कागज निर्माण व घरेलू इंधनों की बढ़ती माँग है ।

अतः हमें वन विकास व उसके संरक्षण को बढ़ावा देकर ही एक अच्छे पर्यावरणीय व्यवस्था की कल्पना कर सकते हैं ।



पापा

श्रीमती अंकीता कुमारी अजय
पत्नी— श्री शैलेन्द्र कुमार
वरि. अनुवादक



पापा एक बहुत ही छोटा सा शब्द है, लेकिन इसमें एक बच्चे की दुनियाँ समाई होती है। माँ का दर्जा सबसे ऊँचा होता है लेकिन पिता का दर्जा भी बराबर का होता है। पापा, आपके प्यार की कीमत कभी नहीं चुका सकती लेकिन उसे शब्दों से इकट्ठा करने की एक कोशिश की है। सुना था कहीं से कि पिता टीन की तरह होते हैं जो बारिश, धूप, ठंड सब सह कर भी वैसा ही रहता है। पापा आपको देख कर समझ आ गया।

याद है मुझे जब भी माँ से डांट पड़ती थी,
आप आ कर पास मेरे, ध्यान मेरा भटकाते थे,
गुस्से में कभी जो मैं बात करूँ,
मन ही मन आप सह जाते थे।
मेरे पास आए कोई परेशानी अगर,
तो आप खुद आगे आ जाते है,
दुख हो या तकलीफ हो, आप नहीं घबराते है।

आपसे ही नाम मिला है मुझे,
वो भी आपसे ही मिली है जिन सांसों पर जी रही हूँ,
सब्र रखना सीखकर आपसे, दुनियादारी से दूर रही हूँ।
सब कुछ आप खुद ही सहते है,
हमें नहीं कुछ कहते है।



जब आप अकेले कुछ सोच कर परेशान हो जाते है,
मैं अगर कुछ पूछूँ तो बहाना कोई बना देते हैं।
जब मैं शादी के मंडप में आई,
आपकी आँखे मुझे एक टक देख रही थी,
बार—बार वो नम हो रही थी,
पर आप सबसे छुपा रहे थे,
अपनी भावनाओं को खुद में दबा रहे थे।
मेरे पास अब शब्द नहीं है और लिखूँ क्या, पापा,
आपकी अच्छाईयों को चंद शब्दों में कैसे करूँ बयां,।



जन्म अगर माँ ने दिया है
तो आपने दी है पहचान पापा,
हाथ अगर हो आपका सिर पर,
पूरी दुनियाँ है साथ पापा,
जितना हो सके बटोर लो, बहुमूल्य है प्यार पापा का,
दिल न दुखाना उनका कभी, हमसे ही है संसार पापा का।
पापा के आशीर्वाद से ही हम आगे बढ़ पाते हैं,
चाह कर भी कर्ज उनका कभी उतार न पाते हैं,
चुनकर चाहे कितने ही सुन्दर शब्दों को लाऊँगी,
पापा, आपके प्यार की कीमत चुका न पाऊँगी।



हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2020-21 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन /की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%



11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें		वर्ष में 2 बैठकें	
	(क) हिंदी सलाहकार समिति			
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	40%	30%	20%
			(न्यूनतम अनुभाग)	

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

अन्य कार्यालयों से आयी हिंदी पत्रिका सुरभि के 16वें अंक का प्रशंसा, सुझाव व शुभेच्छा पत्र

Email: C No-1666 927 10/12/20 Maik agauorissa1@cag.gov.in

Appreciation of Surabhi Magazine - 16 th Issue Sr.DAG (Admn) Sect. 1, Dy. No. 565/11/20

From : CHITRA V <chitrav.tmn.au@cag.gov.in> Thu, Dec 10, 2020 02:43 PM
 Subject : Appreciation of Surabhi Magazine - 16 th Issue 1 attachment
 To : AG Audit I Odisha Bhubaneswar <agauorissa1@cag.gov.in>

15 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA
 "Cleanliness is next to Godliness"

Surbhi Magazine Appreciation.docx
 13 KB

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "सुरभि" का सोलहवां (16 वां) अंक ई-पत्रिका के रूप में प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के इस अंक में संकलित सभी लेख और रचनाएँ सरल, विचार प्रेरक एवं पठनीय हैं। अनुवाद के महत्व और अनुवाद में ध्यान देने योग्य पहलुओं को बताते हुए श्री शैलेन्द्र कुमार द्वारा लिखा गया लेख "अनुवाद : परछाई से आगे" प्रशंसनीय है। श्रीमती मोनिका आचार्य की "खुद की तलाश", श्री लोकेश चंद्र ताल की कविता "क्या हम आज़ाद हैं", श्री आशीष रंजन का लेख "नयी शिक्षा नीति -2020" के साथ साथ अन्य संकलन एवं कविताएँ भी रोचक तथा जानवर्धक हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु उपयुक्त हैं। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी अधिकारी
 वी चित्रा

File No.PAGAE-DADMOHINC(ADMM)/10/2020-HINDI C No-1649 416 9/12/20 Maik agauorissa1@cag.gov.in

भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग
 प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
Indian Audit And Accounts Department
 Pr. Accountant General (A & E), West Bengal

संसाधन / No. PAGAE-DADMOHINC(ADMM)/10/2020-HINDI
 दिनांक / Date : 09.10.2020

सेवा में,
 स.लेखापरीक्षा अधिकारी
 कार्यालय महालेखाकार लेखापरीक्षा-I, लेखापरीक्षा-II
 महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद, शाखा कार्यालय ओडिशा
 भुवनेश्वर- 751 001

विषय : हिंदी गृह पत्रिका सुरभि के 16 वें अंक की पावती एवं अभिमत।
 महोदय,
 आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" के 16 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आभार।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, जानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं पर विशेष रूप से श्री शैलेन्द्र कुमार (अनुवाद : परछाई से आगे), श्री विनय सिंह (मासूम भावनाएँ), श्री आशीष रंजन (नई शिक्षा नीति: 2020), श्रीमती कमला नायक (पौड़िता) की रचनाएँ अत्यन्त ही सराहनीय हैं।

श्री सुराजत कुमार नायक (खिड़की), श्रीमती मोनिका आचार्य ("खुद की तलाश"), श्री सतीश कुमार ("बदले अपना व्यवहार") की कविताएँ सहित अन्य सभी रचनाएँ अत्यन्त, सराहनीय एवं मनोरंजक हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

सुरभि



भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
 कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
 Office of Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
 Date : 08/12/20

हिंदी प्रकोष्ठ (लेखापरीक्षा-I)
 डा.ओ./कैब/ई-मेल संख्या : 434
 दिनांक : 17/12/2020

सेवा में,
 सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
 कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
 उड़ीशा, भुवनेश्वर

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी।
 संदर्भ:- आपका पत्र सं. ई-मेल-1392 दिनांक 30.09.2020

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "सुरभि" के सोलहवें (16 वें) अंक वर्ष 2020 की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं जानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय

अशोक
 31/12/20
 पर्यवेक्षक
 हिन्दी कक्ष

कार्यालय प्रधान निदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
 Office of the Principal Director of Commercial Audit, Mumbai
 सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बान्द्रा कुरी कॉम्प्लेक्स बान्द्रा, मुंबई -400 051
 C-25, Audit Bhavan, 8th Floor, Bandra Kuria Complex Bandra, Mumbai- 400051
 फ़ोन-022 26573814 टेलीफ़ोन नं.-022 26573813 ईमेल pdcamumbai@cag.gov.in

सं.पीडीसीए/प्रशा/हिंदी पत्रिका/ 728 दि. 31/12/2020

सेवा में,
 संपर्क अधिकारी(राजभाषा)
 कार्यालय महालेखाकार, लेखापरीक्षा(प्रथम)
 ओडिशा, भुवनेश्वर

विषय- हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 16वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 16वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का साज-सज्जा अत्यन्त प्रभावकारी है। पत्रिका का सुन्दर प्रस्तुतीकरण अत्यन्त सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ रुचिकर एवं जानप्रद हैं। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट हैं। प्रकाशित रचनाओं में 'अनुवाद: परछाई से आगे', 'मासूम भावनाएँ', 'पौड़िता', 'खुद की तलाश', 'यमराज का कर्तव्य', तथा 'हमारी परछाई' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में शामिल हस्तचित्र बहुत ही सराहनीय हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

विद्या

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा

पोस्ट - मांडार, जीरो प्वाइंट, रायपुर - 493 111 (छत्तीसगढ़)
 Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)

अन्य कार्यालयों से आयी हिंदी पत्रिका सुरभि के 16वें अंक का प्रशंसा, सुझाव व शुभेच्छा पत्र



OM-11/G&SSA/JORDY.Dy.No. 145

हिंदी प्रकोष्ठ (लेखापरीक्षा)
डी.ओ. / लेखापरीक्षा / नई दिल्ली - 110001
दिनांक 07/11/2020

संख्या/No- रा.भा.अ./सा.क्ष.ले.प./एच-1101/के-196/प्रतिष्ठित/2018-21/पे.सं. 145
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान
जनपथ, जयपुर- 302 005
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I) RAJASTHAN
Janpath, Jaipur-302 005

दिनांक/Date- 13-10-2020

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/हि.प्र.,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
ओडिशा,
भुवनेश्वर-751001

विषय- हिन्दी पत्रिका "सुरभि" के 16वें अंक का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सुरभि" के 16वें अंक की सौंपट प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं आकर्षक हैं। पत्रिका को प्रभावी बनाने में कार्यालय कर्मियों के साथ-साथ उनके परिजनों का योगदान अभिनन्दनीय है। बाल कलाकारों द्वारा बनाए गए छायाचित्र सुन्दर और मनमोहक हैं एवं बाल कलाकारों की सृजनशीलता का परिचायक हैं। एक अहिंदी भाषी क्षेत्र से इतना उत्कृष्ट प्रयास प्रशंसनीय है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए देरी शुभकामनाएं। आशा है कि आपकी पत्रिका "सुरभि" इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

भवदीय

(चौन्दर सिंह)
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

टेलीफोन : 2385430-39, 2385131, 2385232
Telephone: 2385430-39, 2385131, 2385232

फैक्स : 0141-2385181
Fax : 0141-2385181

ई-मेल : agaurajasthan1@cag.gov.in
E-mail : agaurajasthan1@cag.gov.in



सं.ओ. 596/र.ई.प. / पत्रिका / 2020-21
कार्यालय महालेखाकार लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएं
एल-11 ब्लॉक, ब्रासेय एवेन्यू, नई दिल्ली - 110001
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
DEFENCE SERVICES, L-11 BLOCK, BRASSEY AVENUE
NEW DELHI-110001
TEL : 23094219, 23093672, 23092583, 23092280
FAX : 23092301
दिनांक/Dated... 23.11.2020

हिंदी प्रकोष्ठ (लेखापरीक्षा-I)

आवक खापरी संख्या : 406
दिनांक : 07/12/2020

सेवा में,

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/ हि.प्र.
कार्यालय महालेखाकार (सा. एवं सा.क्ष. ले.प.)
सचिवालय मार्ग, भुवनेश्वर- 751001

विषय- हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 16वें अंक की प्राप्ति।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 16वें अंक की प्राप्ति हुई। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ अति-प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय हैं। श्री गंगाधर पंडा का लेख "प्लाज्मा थैरेपी: डूबते को तिनके का सहारा", श्रीमति मीनाक्षी आचार्य की कविता "खुद की तलाश", श्री जितेन्द्र कुमार का लेख "आहार, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य", श्री सतीश कुमार की कविता "बदले अपना व्यवहार" एवं श्रीमति अंकिता अजय (पत्नी श्री शैलेन्द्र कुमार) की कविता "हमारी परछाई" उच्चकोटि की रचनाएँ हैं तथा अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक महोदय के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

भवदीय,

(एस. के. सिन्हा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी अनुभाग)
रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली।

[C.Dy.No-1196]

AG (Audit-I)/Sectt./Dy.No. 721 Dt. 12/10/2020
(Mail)



Dr. DAG (Accountant General) Dy.No. 429/13
Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

संख्या हिंदी कक्ष ले.प./आवक पत्रिका-2020-21/637

दिनांक : 09/10/2020

हिंदी प्रकोष्ठ (लेखापरीक्षा-I)
आवक खापरी संख्या : 279
दिनांक : 14/10/2020

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार लेखापरीक्षा
ओडिशा, भुवनेश्वर।

विषय - हिन्दी गृह पत्रिका "सुरभि" के 16 वें अंक का प्रकाशन।

महोदय,

आपके कार्यालय से दिनांक 05.09.2020 को ई-मेल द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका "सुरभि" के 16 वें अंक की ई प्रति प्राप्त हुई है। सहर्ष धन्यवाद।
इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय हैं। पत्रिका के सफल ई संस्करण, संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादन मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उत्तमवर्धन भवितु हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

(विहारी कक्ष)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

सुरभि



कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(Audit-I) West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/ 26

दिनांक:- 29 OCT 2020

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
ओडिशा, भुवनेश्वर- 751017

29 OCT 2020

हिंदी प्रकोष्ठ (लेखापरीक्षा-I)
डी.ओ. / लेखापरीक्षा / नई दिल्ली - 110001
दिनांक : 03/11/2020

विषय: हिन्दी गृह पत्रिका "सुरभि" के 16वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका "सुरभि" के 16 वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। श्री गंगाधर पंडा द्वारा रचित लेख "प्लाज्मा थैरेपी: डूबते को तिनके का सहारा", श्री आशीष रंजन द्वारा रचित लेख "नई शिक्षा नीति-2020", श्रीमती मीनाक्षी आचार्य द्वारा रचित कविता "पर्यवेक्षक", श्री राजेश कुमार झा द्वारा रचित लेख "नारी दुर्देश", श्री सतीश कुमार द्वारा रचित कविता "बदले अपना व्यवहार", श्रीमती अंकिता कुमारी अजय द्वारा रचित कविता "हमारी परछाई" एवं श्री शैलेन्द्र कुमार मेहर द्वारा लिखित कविता "सिरफ़िरे मुसाफ़िर" सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उत्तमवर्धन भवितु तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ कॉम्प्लेक्स, डी.एफ. ब्लॉक, सॉल्ट लेक, 5 वां ताल, कोलकाता - 700064

MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064
Phone : (033) 2358-6886/92; FAX : (033) 2337-6966, E-mail: aglba.Westbengal@cag.gov.in

अन्य कार्यालयों से आयी हिंदी पत्रिका सुरभि के 16वें अंक का प्रशंसा, सुझाव व शुभेच्छा पत्र ▶



महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपूर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR



सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/22/2020-21/जा.क्र.२.३०
दिनांक: - 22/10/2020

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी प्रकोष्ठ)
प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा)
कार्यालय ओडिशा,
भुवनेश्वर-751001

विषय:- गृह पत्रिका "सुरभि" के 16 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "सुरभि" के 16 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ, उत्कृष्ट एवं जानवर्धक हैं। विशेषकर श्री शैलेंद्र कुमार, वरिष्ठ अनुवादक का लेख 'अनुवाद: परछाई से आगे', श्री जितेंद्र कुमार, डी. ई. ओ. का लेख 'आहार, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य' तथा श्री राजेश कुमार झा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक का लेख 'नारी दुर्दशा' आदि उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(सुनिषा)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक बेली क्र. 220, सिविल लाईन्स, नागपुर-440001
दूरभाष / Telephone - 0712-2564506 To 2564510
फैक्स / Fax - 0712-2524130

Audit Bhavan, Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : http://agmahara.cag.gov.in
e-mail : agmaharashtra2@cag.gov.in

सुरभि



प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.) का कार्यालय, हरियाणा,
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं. 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं. 0172-2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT NOS. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824
E mail - agaharyana@cag.gov.in

हि.क./पत्रिका/2020-21/282
दिनांक- 07.10.2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) -1,
भुवनेश्वर, ओडिशा

विषय :- हिन्दी पत्रिका 'सुरभि' के 16वें अंक का सवाग।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 30.09.2020 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'सुरभि' के 16वें अंक की प्रति सहानुभूति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्च-स्तरीय, जानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री शैलेंद्र कुमार की रचना 'अनुवाद: परछाई से आगे' सुश्री कमला नायक की रचना 'पीडिता', सुश्री मोनिका चौहान की रचना 'यमराज का कर्तव्य' व श्री राजेश कुमार झा की रचना 'नारी दुर्दशा' अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

इसके अतिरिक्त श्री लोकेश चन्द खल की कविता 'क्या हम आजाद हैं?' श्री सतीश कुमार की रचना 'बदले अपना व्यवहार' विशेष रूप से पठनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हि.क.)

हिंदी प्रकोष्ठ (लेखापरीक्षा-1)

आवक छापी संख्या: 394

दिनांक: 25/11/2020



भारत सरकार/GOV.T OF INDIA
कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर -751001
O/O THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR -751001

सं.हि.प्र./प.प्र./2020/46

दिनांक: 19.11.2020

सेवा में,

सहायक लेखा अधिकारी/हिंदी प्रकोष्ठ
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),
ओडिशा, भुवनेश्वर-751001

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" के 16 अंक के ई-संस्करण की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" के 16 अंक के ई-संस्करण की प्रति मेल द्वारा प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा एवं समस्त रचनाएँ अत्यंत सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए संपादक मंडल एवं समस्त रचनाकारों को हार्दिक बधाई।

भवदीय,

(सुनिषा)
हिंदी अधिकारी



AM-11(G&SSA)ORDY.Dr.Mn
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
UTTARAKHAND



पत्रांक: हिन्दी/सामान्य-विविध/25-2018-2019/110
दिनांक: 21.10.2020

हिंदी प्रकोष्ठ (लेखापरीक्षा-1)
टी.ओ./कै.ओ. 13 वर संख्या-20
दिनांक: 07/11/2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
महानिदेशक-लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद, शाखा कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर

विषय: अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 16वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपयुक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 16वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसनीय लेख एवं सुन्दर कविताएँ लिखने का सराहनीय प्रयास किया है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

Hindi tell

भवदीय

(सुनिषा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'महालेखाकार भवन', कोलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135-2970870 फैक्स / Fax : 0135-2970871. ई-मेल / E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in

अन्य कार्यालयों से आयी हिंदी पत्रिका सुरभि के 16वें अंक का प्रशंसा, सुझाव व शुभेच्छा पत्र ▶

Fwd: हिंदी गृह पत्रिका सुरभि के 16 वें अंक की पावती। Inbox x

AG Audit | Odisha Bhubaneswar <agaurissa1@cag.gov.in>

to Jyoti, me

Hi Hindi > English Translate message

From: "MOUSUMI CHOUDHARY" <mousumic.asm.au@cag.gov.in>

To: "AG Audit | Odisha Bhubaneswar" <agaurissa1@cag.gov.in>

Sent: Tuesday, October 6, 2020 3:46:17 PM

Subject: हिंदी गृह पत्रिका सुरभि के 16 वें अंक की पावती।

सेवा में,

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी,

विषय: हिंदी गृह पत्रिका सुरभि के 16 वें अंक की पावती का प्रेषण संबंधी।

महोदय,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में कहना है कि आपके कार्यालय की ई-पत्रिका सुरभि के 16 वें अंक की सॉफ्ट प्रति की प्राप्ति हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं जानकारीपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा अति उत्तम है। अतः पत्रिका के श्रेष्ठ संपादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के अतिरिक्त प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक बधाई।

सधन्यवाद,

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम

गुवाहाटी-29



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
UTTARAKHAND



पत्रांक: हिन्दी/सामान्य-विविध/25-2018-2019/111
दिनांक: 29.10.2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी ✓
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

महानिदेशक-लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद, शाखा कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर

विषय: अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 16वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपयुक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 16वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसनीय लेख एवं सुन्दर कविताएँ लिखने का सराहनीय प्रयास किया है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून - 248195 "Mahalekhakar Bhawan", Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in

सुरभि

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची - 834002



OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
JHARKHAND, RANCHI - 834002

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2020-21/89

दिनांक/Date: 17/11/2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
केजरी नगर भुवनेश्वर
ओडिशा - 751001

विषय- हिन्दी पत्रिका "सुरभि" के 16 वें अंक की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित "सुरभि" के 16 वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उत्कृष्ट श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए।

मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए।

शब्दों के लिए अटकिए नहीं।

अशुद्धियों से घबराइए नहीं।

अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।





दिव्यजीवन महांति
पुत्र- श्री जोगानंद महांति
वरि. लेखापरीक्षक



मुरलीधर पंडा
पुत्र- श्री गंगाधर पंडा
वरि. लेखापरीक्षक





सुश्री प्रीति प्रज्ञा नायक
पुत्री- श्री प्रियव्रत नायक
वरि. लेखापरीक्षक



सुश्री तितली पंडा
पुत्री- श्री गंगाधर पंडा
वरि. लेखापरीक्षक

